इस पुस्तक के छपाने वाले धर्मात्मा दातारों

की

नामावली

१०) बाबू महावीर प्रशाद जी जैन वकील ।

५) ला० कवर सैन जी जैन रईस ।

५) ला० पीरचन्द जी जैन रईस ।

५) ला० कुन्दनलाल जी जैन पैनशनर, सभापति श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पंचायती कलाँ हिसार ।

५) ला० रघुनाथ सहाय जी जैन सर्राफ ।

५) ला० जगन्नाथ शान्ति प्रशाद जी जैन सर्राफ ।

५) ला० इन्द्रसैन गुलाबसिंह जी जैन जनरल मरचन्टस ।

५) ला० मंगत राय जी जैन बजाज ।

५) ला० मेहरचन्द जी जैन बजाज ।

३) ला० पारसदास जी जैन बजाज ।

२) ला० केदार नाथ जी जैन बजाज ।

२) बाबू गोकल चन्द जी जैन डिस्ट्रक्ट बोरड ।

२) बाबू विशम्भर दियाल जी जैन अकाउटैरट ।

२) मुन्शी जगतसिंह जी जैन

१) मुन्शी गुलशनराय जी जैन

१) ला० निरंजनदास जी जैन खजांची ।

दिगम्बर जैन महिला समाज हिसार

५) श्रीमती मातेश्वरी बाबू महावीर प्रशाद जी जैन वकील ।
४) ,, धर्म पत्नी ला० नेमीचन्द प्रकाशचंद जी जैन रईस
२) ,, मातेश्वरी अर्हन्त जी जैन बजाज ।
२) ,, मातेश्वरी ला० गोपीचन्द जी जैन ।
२) ,, मातेश्वरी ला० रामप्रताप जी जैन सर्राफ ।
२) ,, धर्म पत्नी बाबू बांकेलाल जी जैन वकील ।
२) ,, धर्म पत्नी ला० अतरसैन जी जैन बजाज ।
२) ,, मातेश्वरी ला० फूलचन्द जी जैन सर्राफ ।
२) ,, धर्म पत्नी ला० कूडूमल जी जैन रईस ।
२) ,, बीबी रेशम देवी जी जैन ।
१) ,, गोरां देवी जी जैन ।
१) ,, धर्म पत्नी ला० गुलाब सिह जी जैन ।
१) ,, धर्म पत्नी ला० रघुनाथ प्रशाद जी जैन ।
१) ,, धर्म पत्नी ला० भगतसिहं जी जैन ।
१) ,, धर्म पत्नी ला० फतेहचन्द जी जैन रईस ।
१) ,, धर्म पत्नी ला० कुशलचन्द जी जैन ।
१) ,, धर्म पत्नी ला० महावीर प्रशाद जी जैन सर्राफ ।
१) ,, धर्म पत्नी ला० शेरसिह जी जैन सर्राफ ।
१) ,, बीबी सेवती देवी जी जैन ।
१) ,, धर्म पत्नी ला० शान्ति प्रशाद जी जैन सर्राफ ।

१)   ,,   धर्म पत्नी ला० रघुबीर सिह जी जैन।

१)   ,,   बीबी कमला देवी जी जैन।

१)   ,,   धर्म पत्नी ला० रामकुमार जी जैन बजाज।

१)   ,,   धर्म पत्नी ला० बाबूलाल जी जैन।

१)   ,,   धर्म पत्नी ला० केदार नाथ जी जैन।

उपरोक्त धर्मात्मा दानी सज्जनों को धन्यवाद है तथा उत्साही युवक गुलाबसिंह जी जैन व श्रीमती गुणमाला देवी जी जैन कन्या पाठशाला की अध्यापिका को भी धन्यवाद है जिन्होने कि अपना अमूल्य समय इस पुस्तक प्रगट कराने की सहायता मे चंदा किया। मै उक्त धर्मात्मा दानियों के लिए श्री बीतरागदेव से प्रार्थना करता हूं कि इन दानी सज्जनों की भावना नित्य प्रति इसी प्रकार बढ़ती रहे।

लेखक
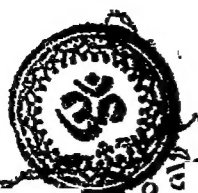
जैन रामायण-उत्तरार्द्ध

वीर छंदोंमें एवं तर्ज राधेश्याम

लेखक

दि० जैन ब्र० सुन्दरलाल सप्तम श्रावक

प्रकाशक

दि० जैन समाज हिसार-पंजाब

परमज्योति परमात्मा, परम ज्ञान परवीन।
वंदू परमानन्दमय, घट घट अंतर लीन॥

प्रथमवार	वीर स०	मूल्य
१०००	२४६६	।=)

दो शब्द

हिन्दू समाज मे रामायण के नाम से क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या वृद्ध, क्या बालक, सभी भली भांति परिचित है । इसमे सन्देह नही कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र का चरित्र सभी भारत वासियों के लिए परम अनुकरणीय है ।

जैन दिगम्बर समाज में पदम पुराण को सभी भाई बहन बड़े चाव और आदर के साथ पढ़ते तथा मनन करते है । संगीत प्रेमियों के लिए (जहां तक मालूम है) जैन धर्म के अनुसार जैन रामायण के विषय मे बहुत कम साहित्य तैयार हुआ है ।

प्रस्तुत पुस्तक इसी कमी को दूर करने के अभिप्राय से तैयार की गई है । पुज्य ब्रह्मचारी जी ने इसमे श्रीमती सीता सती जी का वन गमन वहा वनमें राजा वज्रजंघ का मिलना और उसके घर आकर रहना, लव-कुश का जन्म और राम लक्ष्मणसे उनका युद्ध, सीताका अग्नि कुंड मे प्रवेश, अग्नि कुंड का जल कु ड होना, सीता जी का वैराग्य लेकर तप करना और स्वर्ग जाना अत में भगवान केवली से श्री रामचन्द्र जी को मोक्ष का मार्ग पूछना इत्यादिक कितनी ही बातों का विवरण जैन रामायण का उत्तरार्द्ध प्रारम्भ "वीरछन्दों मे जोकि आज राधे-श्याम,, की तर्ज मे बड़े अच्छे ढंग से ललित शब्दो मे चित्रत किया है । आशा है जैन समाज में इस नवीन रचना को अवश्य आदर दिया जायगा । जिससे लेखक महोदय का आगे के लिए भाव बढ़ता रहै ।

पं० वटेश्वरदयाल बकेवरिया, अटेर (गवालियर)

जैन रामायण उतरार्द्ध

मंगला–चरण

जो स्याद्वाद मयंक के प्रतिभामयी छबि धाम है।
जो रिद्ध सिद्ध प्रकाश दायक वन्दनीय ललाम है॥
नित प्रात तिनके स्मरण से होता अपूर्व विराम है।
ऊन महावीर जिनेश को श्रद्धा समेत प्रणाम है॥

दोहा

विपन वास द्वादस वरष रामचन्द्र महाराज।
भोगि अवध में आनकर करें नीति से राज॥

चौपाई

पुरुजन परिजन परजा वासी ना किसी तरह दुख पाते हैं
धन जनसे सभी मगन होकर गुण रामचन्द्र का गाते हैं २
ना ईति भीति कुछ रही वहां दुष्कृत्य नजर ना आता था ३
उस समय अवध की शोभा को लखि देवलोक शर्माता था ४
जो होनहार सो होती है वह मेटे से ना मिटती है ५
पूरव की की हुई करनी सो अवश्य आन कर फलती है ६
सीता का कर्मउदय हूआ जुरि सठ मिलि दोष लगाते हैं ७
रावण की हरी हुई सीता क्यों रामचन्द्र अपनाते हैं ८

उनके ही घर ये रीत चली तो और कौन फिर मानेंगे९
इसही मारग पर चल करके सब अपनी ७ ठानेंगे १०

दोहा

इसी तरह पर अवध में चरचा है सब ठौर ।
सुनि धर्मी जन मिल कछुक चले रामको ओर । १
तिस ही दिन सीता सती महलों के दर्म्यान ।
सोती पिछली रैन में सपने देखे आन । २

चौपाई

होतई भोर स्नान किया फिर धर्म ध्यान को ध्याती है।
सखियों को साथ लिवा करके आ रामचंद्र ढिग जाती है१
करि विनय जोड़कर कहन लगी है नाथकृपा करबतलाओ
दो स्वप्न राति को देखेहैं उनका फल क्या सो समझाओ२
दो अष्ठापद बलवान गर्जना करते हूए आये हैं।
शशि के समान उज्वल दोनों मोमुख हो अन्दर धाये है३
पुष्पक विमान में बैठ मैंने जा नभ के बीच उड़ाया है।
गिर गई अचानक उसमें से ना फेरि नजर कुछ आया है४
सुन सीता जो से सुपनों को यों रामचन्द्र समझाते हैं।
धरि ध्यान सुनो सुन्दरि सारा इनका फल तुम्हें सुनाते हैं५
है अष्टापद का महातम ये दो पुत्र तुम्हारे होवेंगे।
बलवान वीर दोनों मिल कर वीरों के मध को धोवेंगे ।६

गिरना विमानसे ठीक नहीं कुछ अशुभ होत दिखलाती है।
सो इसकी चिन्ता करो मती करि धर्म सभी मिट जाता है७
यों स्वप्नों का फल सुन करके जा पूजा दान कराती है।
औषध अहार बनवा बनवा दुखियों के काज बटाती है८

दोहा

अवधपुरी में सब जगह होरहा दान अपार।
वसंत राजा ने तभी आकर करी बहार। १
कदम सरस और आमली नींबू आम अनार।
केला जामन केतकी नीम खैर कचनार। २

चौपाई

गेंदा गुलाब चम्पा राई मरुए नें महक उड़ाई है।
मालती खिली केसरि क्यारी गंध दशोंदिशा में छाई है१
तालाबोंमें खिलि रहै कमल मकरंद आन कर गिरते हैं।
सारस-चकवा करते कलोल हंसों के जोड़े फिरते हैं। २
हो मगन मोर नाचने लगे-चातक ने शोर मचाया है।
कोयलकी बानी सुनि २ के आ काम देव लहराया है ३
यों ऋतु बसंत की शोभा आ चौतर्फा वनमें छाई है।
उस समें सिया के गर्भ भार सेदुर्बलता सी आई है।४
तासमें राम पूछते भये सुन्दरि कहो क्या अभिलाषा है
बतलादो जलद करूं पूरण नहिं रहने दऊं निरसा है ५

तब सती जानकी कहन लगी स्वामी यह आशा मेरी है।
जिन भवननके जहां जहां दर्शन करवादौ करौ न देरी है ६
ले हैंम रत्न मय पुष्प जाऊं येही मेरी अभिलाषा है।
जिन बिम्बनका पूजन करलूं होजाय मनोरथ खासा हैं ७
सुनि रामचन्द्र को हर्ष हुआ कह करके मंत्री बुलवाये।
जहाँ २ जिन मन्दिर उत्सवहों ऐसे कहि तिनको समझाये८
तोरण और ध्वजा मन्दिरों में ले वंदन वारे सजवाओ।
घंटा झालर आदिक बाजे बजवाके पूजन करवाओ ९
निर्वाण क्षेत्रों पर जाके अतिशय के उत्सव करवाओ।
चारों प्रकार का दान होय हर जग घोषणा करवाओ १०
सीता को हुआ दोहला है तिस को यात्रा कर वावेंगे।
कल्याणों की पूजा कर २ धर्मका महत्व बढ़ावेंगे। ११

दोहा

राम बचन परमान ही मंत्री न किया उपाय।
किंकर बुलवाये तुरत जहां तहाँ दिये पठाय।१
अवध नगर और विपनके मंदिर सजे अनूप।
मोतिन की झालरी सहित कलश चढ़े स्तूप २

चौपाई

सुवरण गलवा कर भीतोंमें चित्राम अजव खिचवाये हैं।
मणियों से शोभित खंभ किये छत्तों में कांच लगाये हैं १

मोतिनकी झालर लटक रही दरवाज्जे अधिक सजायेहैं।।
पाँचों प्रकारके रत्नोंका चूरण करि चौक पुराये हैं ॥२
लालाकर कमल सहस्र दलके चौकों में चौक लगाये हैं।
और भी अनेक भांति के लाकर पुष्प तहाँ बिछवाये हैं।३
सिखरों के ऊपर चढ़ी हुईआकाश ध्वजा फैराती हैं ॥
पुन्नी पुरुषो को मनों इसारा करके वहीं बुलाती हैं ॥ ४
बन रही सभा न्यारी २ कोइ नाचि रहा कोई गाता है।
उस समय अयोध्याका उपवन नंदनबन सा दिखलानाहै ५
फिर रामचन्द्र तैय्यार हुये अपना हाथी सजवाते हैं ॥
सीताके सहित बैठि तिसपर आपुर से बाहिर जाते हैं ६
लक्ष्मणभी संग होय लीये सब लोग कुटुम्बके आते हैं।
तीरथ करने के हेत खुसी हो मिलकर मङ्गल गाते हैं ।७
और भी नगर के नरनारी जैनी जन यात्रा करने को।
संग रामचन्द्रके चलदीये भव सागर पार उतरने को ८
रघुनाथ अयोध्या से चलके आ पहिला वहां मुकाम किया।
जिस बनमें हुई तयारी थी आके मंडप तनवाय लिया ॥९
और भी संगके साथिन को हित करि २ के ठैहराते हैं।
फिर तालाबों पर जाजा के जल छान २ कर न्हाते हैं ॥१०
लेले के उत्तम अष्ट द्रव्य कंचन की थाली भरते हैं।
सीताके सहित रामजी जा जिनवर का पूजन करते हैं ॥११

अपछरा समान हजार आठ जो रामचंद्र की रानी थे।
सबही मिलि पूजन करवाती गा २ के मधुरी बानीथें ॥१२

दोहा

उस महिमा के कथन को, नागपती लाचार।
तो मुझ सर का अलपमति, कहै कैसे विस्तार ॥१
अति अनुरागी धरम में, दशरथ जी के लाल।
पूजा निरत प्रभावना, करते तीनों काल ॥२

चौपाई

इस तरह वहां रहते २ कुछ बन में दिवस बिताये हैं।
याचक लोगों को दान दिये जैसे जाके मन भाये हैं ॥१
तिस समें सकलही पुरवासी मिल करके वहांपर आये हैं।
उन द्वार पालियासे आकर ऐसे कहि बचन सुनाये हैं।२
हम पास राम के जावेंगे यह कहो सन्देश जा करके।
उनकी आज्ञाको पाकरके हमको लेचलो लिवा करके ३

(राम कर सीता का परित्याग)

दोहा

द्वार पालिये ने खबर करी राम पर जाय।
तिसो समयका जिकर एक और सुनो मनलाय ॥१
सोता जी को अपशकुन तब ही हुआ आय।
आँख दाहिनी फड़कर बार बार लहराय ॥ १

चौपाई

इस तरह देखकर अशकुनको सीता विचार मन करती है।
होगा कछु-कष्ट अवश्य आके ये बात मुझे लखि पड़तीहै १
पहले भी कर्म निर्दई ने लंका लेजा दुख दिलवाया।
फिर भी सन्तुष्ट नहीं हूआ ना जाने क्यो करना चाहा २
जैसी ये जीव करै करनी सो अवश्य भोगनी पड़ती है।
चाहे कोई कोटि उपाय करो वो टारे से ना टरती है ॥३
इस तरह सोच करती हूई सखियन सो बात जनाई है।
मेरी आँख दाहिनी फड़के है क्या फलहो देउ बताई है।४
यह सुनि इक चतुर सखी बोली है देवि कर्मकी गतिन्यारी।
शुभ अशुभ कर्म कीये हूए फल भले बुरे का दातारी ५
एही तो काल कहाता है विधि इस ही को बतलाते हैं।
हे देवि यही ईश्वर कहिये अपनी करनी दिखलाते हैं।६
जो जीव इन्हों के बस में हैं संसारी बन दुख पाते हैं।
हैं सुखी जीव वोही बहना जो इनकी खाख बनाते हैं ॥७
फिर सखी दूसरी आकरके सीता को यों समझाती है।
है पती तुम्हारा सब लायक क्योंकर बिकलय उपजाती है८
आसखी तीसरी कहनलगी कुछ शांतिकर्म होना चहिये।
पूजा अविशेष दान तप करि हनि अशुभ कर्म सुख लहिये ९
ये बचन सखिनं के सुन करके भंडारी को बुलवाया है।

दो इच्छित दान जिसे जैसा ले जावै मनका भाया है १०
खुद शुभ किरिया करने लागी पूजा बिधान करवाती है
कहीं समोशरणकी रचना कर कहिं ढ़ाई दीप रचातीहै११
कहि होय प्रतिष्ठाभारी है कहिं पर अविशेष कराती है।
ले नये नये उपकर्ण मन्दिरों में जा जाय चढ़ाती है ॥१२

दोहा

लिखवा लिखवा सासतर किये बहुत से दान।
शान्ति चित्त हो कर सदा करै प्रभू का ध्यान १
द्वार पालिया चलि दिया हुकम राम का पाय।
जो जन द्वारे खड़े थे लाया तिन्हें लिवाय ॥२॥

चौपाई

श्रीरामचन्द्र के चर्णों में सब ही ने शीश नवाया है।
तहाँ देखि सभाको शोभा को तिनके उर अचरज आयाहै१
हो गये चकित कॉपने लगे ना कहने में बन आता है।
यह देख राम पूछने लगे क्या तुमको दहसत आता है २
होके बेधड़क कहो भाई आने का कारण बतलाओ।
दिलकी जो बिथाकहो सारी मत किसी तरहका भयखाओ ३
इस तरह दिलासा देने पर भी बचन नहीं बन आते हैं।
हैं बीच सभा के खड़े हुये चित्रामों से दिखलाते हैं ॥४॥
तब बिजय नाम मुखिया सबमें होकरके कहै हिरासा है।

देदीजै अभय दान स्वामी कह दऊं हालियत खोसा है ५
कहने बिन भी ना रहा जाय कहते तो दुक्ख उठाते हैं।
इस कारण लज्जा के मारे ना दिलका हाल सुनाते हैं ६
यह सुनि रघुनाथ कहन लागे होभाई तुम क्यों डहतेहो।
दिलको हालतको बतलाओ जल्दी क्यों देरी करते हो ७
जहां तक मोसेहो सकताहो दुख दूर तुम्हारा करदूंगा।
गुण ग्रहण करूं थारे सारे औगुण हरगिज ना देखूंगा८
इस तरह दिलासा होने पर कुछ विचार मनमें आता है।
कर जोड़े शीसनवाय विजय मुखिया यों बचनसुनाता है९
है नाथ नरोत्तम सुन लीजे म्हारी थोड़ी सी बिनती है।
परजा मरजाद रहित हुई उलटी चल पड़ी प्रवरती है१०
जो स्वभाव से ही कुटिल होंय वो कुटिलाई ही करते हैं
मिलिजाय सहारा यदि उनको तो फेरि कौंनसे डरते हैं११
बानर की तरह चपल होकर अति चंचलता दिखलाते हैं।
घर नगर बाग बनादिक में जा कूदा फांद मचाते हैं १२
इस तरह निवल की नारिन को बलवन्त छीन लेजाते हैं।
उन शीलवती बिरहिनियों को घरजाकर कष्ट दिखाते हैं१३

दोहा

कोइक पाय सहाय कुछ अपना अवसर पाय।
वहां से उन्हें निकाल कर घर में राखें लाय १

इस कारण से हर जगह हो रहा अन्धेर ।
मर्यादा जो धर्म की लोय होय ना देर २

चौपाई

ज्यों धर्म रहै सो यत्न करो परजा में होवे साता है ।
तुमसा हितकारी और कोई ना दूजा हमें दिखता है १
तुम नीति निपुण त्रैखंड पती इसलीए लिया सहारा है ।
खलके घालक जनके पालक जग जाहिर नाम तुम्हारा २
तुमहीं यदि नहीं सहाय करो तो दूजा कौन सहाई है ।
इसलिए आपके सन्मुख आनिर्भय ही टेर लगाई है ३
नदियों के तट बन कूपों पर गलियों में कहते फिरते हैं ।
घर २ और हाट बाजारों से अपवाद आपका करते हैं ४
हैं गांव २ में यही कथा ना कसर राम ने राखी है ।
रावण की हरी हूई सीता को लाके घर में राखी है ५
तो हमको कहा दोष भाई राजा ने रीत चलाई है ।
जैसा राजा वैसी परजा ये बात जगत में छाई है ६
इस तरह निरंकुश होकरके दुष्टों ने बात बनाई है ।
है देव उपाय करो तिनका इसलीए आय जनाई है ७
तुम मर्यादा राखन हारे पुरुषोत्तम पुरुष कहाते हो ।
इन्द्रों से राज अधिक अपने को क्यों बद नाम कराते हो८

दोहा

इस चरचा को सुनत ही बज्जर की सी मार।
पड़ो राम के हृदय पर करने लगे विचार १
सुयस हमारा जगत में कमलों का सा बाग।
सो सीता के निमित से जल कर बनता आग २

चौपाई

इस सीता के कारण बनमें मैं भारी कष्ट उठाया था।
सागर को लंघ कर पार गया रावण से युद्ध मचाया था १
फिर फते उसे लाया इसको कुछ सुखसे काल बिताना था।
सो उलटा पड़ा आन करके ये भेद नहीं पहचाना था २
जो लोग कहें सो साँची है ना कहते बात बना करके ॥
रही दुष्ट पुरुष के घर सीता क्यों राखी मैंने ला करके ३
सीता से मेरा प्रेम अधिक कैसे न्यारी कीनी जावे ॥
उस पतीव्रता गुणवन्ती में ना कोई दोष नजर आवे ४
अथवा त्रिन के हिरदय का कारण को जाने कैसा है ॥
जिनमें सब दोषोंका नायक मनमथ बस रहा हमेसा है ५
है सब दोषों की खानि यही स्त्री का जन्म बताया है ॥
ऊंचे कुल वाले पुरुषों को नीचा करके बैठाया है ६
जैसे कीचड़में फंसा हुआ पशु बाहर नहिं आसक्ता है ॥
तैसे स्त्री के राग रूप में आकर प्राणी फसता है ७

है बल का नाश करन हारी विषयों में यही फंसाती है ॥
ओड़ी खाई के समान यह बुद्धी को भ्रष्ट बनाती है ८
निर्वाण नहीं होने देती भववन ही में भटकाती है ॥
ग्यान को बना देती उलटा और का और करवाती है ९
भस्म से दबी अग्नी समान डाभ की अनी सम पैनी है ॥
बाहिर से रूप मनोग लगै भीतर से नर्क नसैनी है १०
सांपकी कांचलीके समान लखि छोड़ि इसे दूरहि रहिये ॥
इस तरह आपदाकी कारण जानकी नहीं रहनो चहिये ११

दोहा

इस प्रकार से मथन मथ फिर भी रहे पछिताय ॥
यह अर्धांगिन सिया जी कैसे छोड़ी जाय १
निकट रहै तो अग्नि सम उपजावै आताप ॥
दूर जाय बस मोह के सहा न जाय विलाप २

छन्द

एक ओर लोकपवाद है इक ओर राग विषाद है १
इससे पार कैसे पडूं विकलप समुद्र अगाध है २
सीता सती निर्दोष है ना कभी कुटिल स्वभाव है ३
आज्ञा बजाने का हृदय में हमेसा उत्साव है ४
जो ना तजूं संसार में होगा बड़ा अपवाद है ५
दोनों तरह अटकी कठिन किस तरह मिटै विशाद है६

दोहा

आखरि को चाकर बुला तिसै रहे समझाय।
लक्ष्मणजी पै जाय कर लावो यहां बुलाय १
द्वारपालिये ने तहाँ कहा संदेसा जाय।
सुनतहि नारायण चला पहुँचा तहां पर आय२

चौपाई

आ करके निकट जोड़ कर जा चर्णों में शीश नवाया है ॥
उस बीर बली के मस्तकको निज कर से राम उठाया है १
आधे आसन को खाली कर लक्ष्मण जी को बैठाया है ॥
फिर च्तेम कुशलको पूछ हर तरह प्रेम भाव दिखलाया है २
और भी अनेक महोपत तहाँ उत्सव के कारण आते हैं ॥
उस भरी सभा के बीच राम सीता की कथा उठाते हैं ३
सुनि लक्ष्मणजी को क्रोध हुआ द्रग लाल २ हो आये हैं ॥
तहां भरी सभा के लोगों में ऐसे कहि बचन सुनाये हैं ४
मैं अभी जाय उन लोगों को यहां बांध २ कर लाऊंगा ॥
विरथा अपवाद करन वालों को खूबहि मजा चखाऊंगा ५
जिसने यह बचन असत्य कहै उसकी जिभ्या कटवाऊंगा ॥
इसमृषाबाद से रहित मही सारी को अभी बनाऊंगा ६
उस शीलवती माता की निन्दा जहाँ २ सुनि पाऊंगा ॥
उनहीं दुष्टों को पकड़ २ के यमके लोक पठाऊंगा ७

इस तरह क्रोध होरहा महा द्रग अरुण वरुणहो आये हैं ॥
तव रामचंद्र ने शान्ति दिला नारायण को समझाये हैं ८
है बन्धु सदा से यही रीति अपने कुल में चलि आई है ॥
तन धन जन चाहि चला जावै परजा पर करें रिहाई है ९
आगे हो गये श्री ऋषभदेव उन ने ये राह चलाई है ॥
उनके सुत भरत बली हूऐ ना रिपु को पीठ दिखाई है१०
जिनकी कीरति इस भारतमें अब तलक रही मडराई है ॥
और भी अनेक हूऐ राजा जो लेते गये भलाई है११

दोहा

इस रघुकुल में सदा से चलि आई यह रीति ।
मन वच काय लगाय कर करें प्रजा से प्रीति १
थोड़े से जीतब्य पर विषय भोग के काज ।
अपयश होना ना भला चाहि चला जाय राज २

चौपाई

कीरति की सभी जगै महिमा मिल कर देवों ने गाई है ॥
अप कीरति वाले को जग में मिलती हर तरह बुराई है १
वह जिन्दा ही मुरदे समान जिसने अपबाद कराया है ॥
है मरा हुवा भी वह जिन्दा जिसका यश जगमें छायो है २
ये भोग मनोहर बिनाशीक ना सार जरा भी पाई है ॥
कीरति रूपी सुन्दर बन को बनि अग्नी देय जलाई है ३

यद्यपि सीता है शीलवती ना दोष नजर कोई आता है ॥
फिर भी उसको घरमें रखना मुझको धब्बा लगवाता है ४
है भ्रात हमारा कुल उज्वल चंद्रमा समान दिखाता है ॥
सो आज अयश घनमंडल उसके ऊपर छाया जाता है ५
इसलीये वही उपाय करो ना कुल कलंक लगने पावै ॥
दो सीता को निकाल घर से ना दूजी बात नजर आवै ६
यह सुन नारायण कहन लगे है देव नहीं ऐसी कहिये ॥
इन नीच जनोंके कहने से क्यों सीताजी तजनी चहिये ७
है दुष्टों का स्वभाव येही अपवाद सवों का करते हैं ॥
और तो अलग रहन दीजै मुनियों के शिर पर धरते हैं ८
है जैन धर्म सब से उत्तम उसमें भी दोष लगाते हैं ॥
अपनी अपनी बातैं बनाय जा जगै २ फैलाते हैं ९
निर्मल शशि सबै दीषताहै ना दोष कहीं दिखलाते हैं ॥
तिसको भी तो ये दुष्ट लोग काला ही काला गाते हैं १०

दोहा

इसीलीये इनके प्रभु वचन सत्य हैं नांहि ।
अच्छी तरह विचार कर देखलेउ मन माहिं १
सुन लक्ष्मणजी के वचन तिसे रहे समझाय ।
लोक विरुद्धी बात जो मुझसे सही न जाय २

चौपाई

अपयश रूपी ज्वाला जिसकी जा दशों दिशा में छाई है ॥
वह जगत बीच ना सुखी कभी रहती ही आकुल ताई है १
जहां परमारथ नहिं होता है वह झूंठा माल खजाना है ॥
जिस औषधि में विष मिला हुआ उसका भी वृथा खाना है २
बलवान हुआ और दया नहीं उसका भी जीवन थोथा है ॥
साधू होकर इच्छा रखता सो खाय सरासर गोता है ३
जो ज्ञान पने का दावा कर आतम काहित नहिं करता है ॥
सो तन बोझा को बार २ ले जन्म जगत में धरता है ४
जो कीरति रूप बधू पाकर अपवाद हाथ हर वाते हैं ॥
इतनों का जीवन वृथा नहीं यहाँ वहां बड़ाई पाते हैं ५
अपयश का तो रहा दोष दूर प्रथम है दोष यही भारी ॥
रावण की हरी हुई सीता लाकर मैंने घर में डारी ६
राक्षस के घर में रही सिया वह बार बार वहाँ आया है ॥
ऊंची नीची दृष्टि सों लखि बोला जो मन में भाया है ७
ऐसी सीता के लाने में ना मुझ को लज्जा आई है ॥
धिःकार जगत की माया को दीया मोय मूढ़ बनाई है ८
इस तरह खूब समझाय कही जल्दी सेनापति बुलवाओ ॥
कहदो उसको लेजाय अभी सीता को बन में भिजवाओ ९
फिर भी लक्ष्मणने हाथ जोड़ शिरनाय विनय बहुकीनाहै ॥

हैनाथ सतीको निकालना ये बिलकुल बात सही ना है॥ ०

दोहा

सुकमारी भोरी सती कहां अकेली जाय ॥
गर्भ वेदना की तहा किस विधि करै सहाय ॥
जैन धर्म को पालना किस विध तहां पर होय ॥
शुद्ध अहार बनाय कर देय वहाँ पर कोय ॥

वार्ता—

यह आपके तजे कौन को शरण जावेगी, और आपने देखनेको कही सो देखने कर कहा दोष भया जैसे राजा के निकट चढ़ाया द्रव्य निर्माल्य होय है उसे देखिए है, परन्तु देखें दोष नहीं और अनेक अभक्ष्य वस्तु आँखों से देखिये हैं परन्तु देखें दोष नहीं अंगीकार किये दोष है।

दोहा

इसी तरह ना मात को रंच मात्र भी दोष ॥
मम करूणा पर ध्यान दे क्षमा करो सब रोस ॥

चौपाई

यह सुनि रघुनाथ क्रोध करके तीखे से वचन सुनाते है ॥
हे बन्धु तुम्हारे कहे वचन ना मेरे मन में भाते हैं ॥
मैंने तो निश्चय कर लीया सीता को अवश्य निकालूंगा॥

दूसरे मनुष्य के सँग रहित इकली को बन में डालूंगा २
वहां दुखी रहो या सुखी रहो कर्म की उदय जो पावैगी ॥
इसकी भी मुझे नहीं पर्वा जिन्दी रहै या मरजावैगी ३
अब लाख बात की बात यही क्षण मात्र नहीं रहने पावै ॥
पिटवादो डोंडी सभी जगह कोई ना घर में ठैरावे ४
कृतान्त वक्र सेनापति को बुलवाया सजि कर आता है ॥
रथ चार अश्व के मैं सवार सेना को संग में लाता है ५
बखतर शस्त्र से सजा हुआ केहरी समान दिखाता है ॥
शिर ऊपर सुन्दर छत्र फिरै वनि रहा वीर मद माता है ६
धुनि जय २ कार लोग करते बन्दी जन विरद बखानें हैं ॥
इस तरह वीर के बाने को लखि पुर वासी भय मानें हैं ७
है आज दिवस किसका खोटा जिस पर ये दौड़ा जावै है ॥
होगा कोई अवश्य बिगाड़ आज पर भेद हमें ना पावै है ८
आ रामदेव ढिग सेनापति चरणों में शीश नवा करके ॥
बोला है नाथ कहा आज्ञा जो लाऊं अभी बजा करके ९
सुनि रामचन्द्र यो कहन लगे ये कार्य हमारा कर आवो ॥
सीता को रथ में बैठा कर पिरथम तो यहाँ से लेजावो १०
रास्ते में जो जो जिन मन्दिर सबही के दर्शन करवावो ॥
सम्मेद शिखर निर्वाण क्षेत्र लेजाकर उसको दिखलावो ११
और भी जहाँ जिन तीरथ हैं करि आशा पूर्ण करवाओ ॥

फिर सिंह नाद अटवी में इकली छोड़ उसे तुम आजाओ? ७

दोहा

सुन कर सेनापत तभी होय गया तैयार ।
जो कुछ आज्ञा आपकी करूं नहीं इन्कार १
जहां जानकी का भवन लारथ दिया टिकाय ।
अन्दर जा करके कहा चरणों में शिर नाय २

चौपाई

हे मात उठो रथ में बैठो तुम को तीरथ करवाऊंगा ।
जहां जहां आपकी अभिलाषा हो वहां वहां पहुंचाऊंगा १
सुनि सेनापति के वचनों को ना हर्ष हृदय में माया है ।
जिनवर को करके नमस्कार गई बैठ तुरत हकवाया है २
जयवन्त चतुर्विध संघ रहो ये बार बार उच्चारा है ।
श्रीरामचन्द्र जय वन्त रहो जिन शुभ आचरण सम्हारा है ३
जो सखी सहेली लार हुई तिनको हित कर समझाई हैं ।
मैं यात्रा करिके जल्द मिलूं ऐसे कहके लौटाई हैं ४
सिद्धों का सुमिरण बार बार रथ में बैठी ही करती है ।
हो जाय यात्रा सुफल मेरी मन माहिं भावना भरती है ५
रथ बढ़ा दिया सेनापति ने मानिंद पवन के चलता है ।
सर भरत चक्रवर्ति के सम मारग में नहीं अटकता है ६
तिससमय आय अशकुन हुआ सीताने तिसे निहारा है ।

सूखे तरू ऊपर बैठि कागने खोटा बचन निकारा है ७
सन्मुख स्त्री रोती हुई शिर खुले हुए से आती है।
इत्यादिक अशकुन होय रहे सीता ना मन में लाती है ८
जिनवरकी भक्ति हृदयमें धरि बेधड़क चलीही जाती है।
राणी इन्द्राणी के समान सीता जी शोभा पाती है ९
गरुड़ के समान बेग वाले घोड़े ले रथ को जाते हैं।
नदिया पर्वतको उलंघि जाथं ना बनमें रोका खाते हैं १०
मारग में नगर पहाड़ पड़े ले ले कर नाम बताता है।
इस तरह यात्रा कर सीता आ घोर बनी में जाता है ११
हो रही अंधेरी तरूओं की मानों सूरज छिप जाता है।
चौतर्फा हिंसक जीव फिरें ना रखें किसी से नाता है १२
इस बनका पूरा हाल कहूं तो पावे नाहिं ठिकाना है।
लो इतने ही में जान सभी मानों वह काल घराना है १३

दोहा

चलत चलत सेना पती आया गंगा तीर ।
जाकर पल्लीपार पर डाट दिया रथ धीर १
धाड़ मार रोवन लगा काँपन लागा गात ।
आँखों से आंसू बहें कहत न आवै बात २
देखि सारथी की दशा सीता पूछै ताय ।
कहा बिपति आकर पड़ी बीरन देउ बताय ३

चौपाई

बोला सारथी दुखी होकर है माता हृदय धड़कता है ॥
शस्त्रके समान वचन पैना सो कहना मुझ को पड़ता है १
दुष्टों के मुख अपवाद सुना श्री रामचन्द्र भय खाया है ॥
यात्रा के मात बहाने से बन में तुम को छुड़वाया है २
लक्ष्मणजी ने भी आकर के बेहद राम को समझाये ॥
कहे न्याय नीतिके शब्द हर तरह ना उनके चितमें आये ३
हट छोड़ा नहीं रामजी ने आपका मोह नहिं कीना है ॥
यात्रा करवाय बिकट बनमें दो छोड़ हुकम ये दीना है ४
हे स्वामिन अब यहां हो रहिये इस बनको ही ससझो निज घर
जगमें ना कोइ किसीका है जब आन पड़ै आके अवसर ५
रहे धर्म जीव के साथ सदा वोही है साँचा हितकारी ॥
इस लिये शरणि उसहीकी लो वह करै तुम्हारी रखवारी ६

दोहा

सुनि सेना पति के वचन बज्जर कीसी मार ।
लगी हृदय में चोट आ खाकर गिरी पछार १
हो सचेत कहने लगी रोय रोय बिलखाय ।
हे भ्राता जलदो मुझे पती पास पहुँचाय २

चौपाई

नृ कहै मात सो होय नहीं यहाँ से है बहुत दूर नगरी ॥

लौटाने का ना हुकम मुझे कैसे ले चलूं लिवाकर री १
गई टूट आस ना रहा सबर ऊंचा स्वर करि डकराती है ॥
रोती रोती सीता जी फिर सेना पति को समझाती है २
ये बीरन जाय रामजी सों यों मेरी तरफ से कह देना ॥
जैसे मेरा त्यागन कीना मत जैन धर्म को तज देना ३
मेरे त्यागन का खेद कभी ना करें सदा धीरज धरना ॥
करि न्याय नीतिसे राज प्रजाका सुत समान पालन करना ४
जिस तरह प्रजा चाहती रहै बनि उसी तरह रहिये न्याई ॥
शरदके चाँद सम शीतलता रहै सदा जगत में दिखलाई ५
संसार असार भयानक है हर तरह दीखता दुखकारी ॥
सम्यग्दर्शनके बिना और विधि मिलै नहीं शिवकीनारी ६
ये राज सम्पदा विनाशीक ना गई सँग ना जावैगी ॥
मानिंद धनुष नभ के जैसे रंग दिखलाकर मिट जावैगी ७
करते अभव्य मिलकर निन्दा उनके बचनों से ना डरना ॥
है पुरुषोत्तम ये बार बार अरजी मेरी चित में धरना ८
ये नर भवपाना दुर्लभ है छूटा हूआ फिर नहिं मिलना ॥
ज्यों डारि हाथसे रतन समुद्र में मिलै नहीं कितनाइ तरना ९
है ये संसार सब तरह का किस किस को रोका जावैगा ॥
जिसके मनमें जो आय गई वो वैसे ही कथि गावैगा १०

दोहा

इस लीये सुन कर प्रभो सब के मन की बात।
करो योग्य सो होय ज्यों सम्यक् होय न घात १
गाड़ी लीख प्रवाहमें वहे जाय अज्ञान।
तिनकी बातों का कभी करना नहि श्रद्धान २

चौपाई

रहे प्रेम भाव सब जीवों में अनुकम्पा करते ही रहैना॥
आर्जिका मुनिनको भक्ती कर निर अन्तराय भोजन देना १
श्राविका श्रावकोंकी सेवा जिस तरह होसकै कर देना॥
करि भक्ती पंच परम गुरुकी शुभ कर्म उपार्जनकरलेना २
क्रोध को क्षमा से जीति लेउ मानको कभी भी नाकरना॥
निष्कपट रहो सन्तोप सदा संवेग भाव धरते रहना ३
अब हाथ जोड़कर अर्ज यही करि बार बार बतलाती हूं॥
मनबचन कायसे हुआ होय अबिनयसो माफ कराती हूं ४
इतनी कहके रथ से उतरी खाकर पछाड़ गिर जाती है॥
हो गई अचेतन सुध तनकी मुर्दे समान दिखलाती है ५
यह देखि हालित सेनापति हो दुखी बिचारै मन में है॥
किस तरह मातके बचें प्रान इस महा भयानक बनमें हैं ६
फिरते चौतर्फा दुष्ट जीव जो मार मार खाते हैं॥
इस महा भयानक जंगल को लखि शूर वीर डरजाते हैं ७

यहां पर वीरों की गम्य नहीं ये कैसे प्राण बचावैंगी ॥
आकर कोई हिंसक जीव भखै ये नाहक मारी जावेगी ८
इस महा सती सीताजी को यहां छोड़ि अकेली जाताहूं ॥
है मुझसर का निर्दई कौन ना रहम जरा भी लाता हूं ९
एक और आज्ञा स्वामी की इक लंग ये निरदय ताई है ॥
इस दुःख भमर से निकलन की ना वन सकती चतुराई है१०
धिक्कार पराई सेवा को इससे कोई काम न खोटा है ॥
ये पराधीनता ही जगमें बनवादे सब से छोटा है ११
बाजा अरु चाकर हैं समान दोनों की गती एकसी है ॥
वह साजिदा के हाथ बजै यह कहता स्वामी कोसी है १२

दोहा

चाकर से कूकर भला नहीं किसी का बन्ध ॥
पेट भरै स्वाधीन हो फिरता सदा सुछंद १
ज्यों पिशाच के वस पुरुष करै और की और ॥
सेवक ताई की दशा रहै सदाँ इस तौर २

चौपाई

चाकर होकर क्या २ न करे क्या २ नहीं करता फिरता है ॥
धिःकार जीवना किंकरका ना मिलै कभी भी थिरता है १
उज्वलता लज्जा रहै नहीं ना उच्चपना दिखलाता है ॥
काठ के पूतले के समान फिरते ही समय बिताता है २

ना तेजपना रहता इस में चतुराई को मिटवाती है और
धिःक २ इस पराधीनता को ना मनको बुझने पाती है ३..
धिक्कार चाकरी को जिसमें मैं घोर पाप ये करता हूं ॥
निर्दोष सती सीता जी को इत छोड़ि अकेली टरता हूं ४
इसतरह खूब पछितावा करि आखरिको वहांसे चलदीया ॥
कुछ अरसेमें हुआ चेत सतीने उठ करके विलाप कीया ५

दोहा

युत्थ भ्रष्ट हिरनी दुखी त्यों सीता बिल्लाय ॥
बा वन बिकट उजाड़ में दीषै नाँय सहाय १
गिरगिर कर पुनि २ उठै रुदन करै करिशोर ॥
देखि देख बन की मृगी रोय रहीं चहुँ ओर २

चौपाई

सुनि सुनि के रुदन जानकी का वृक्षों से फूल टपकते हैं ॥
पक्षी गण सुनकर मौन हुये ना दाना पानी भखते हैं १
हा नाथ कहां कितको जाऊं आ मारग क्यों न बताते हो ॥
दाशी से बचना लाप आयकर धीरज क्यों न बँधाते हो २

छंद

तुमतो हमेसा शान्ति चित ना कुछ तुम्हारा दोष है ॥
पूरब कमाये कर्म बैरी ने किया आरोस है १
जैसी करै वैसी भरै यहां नहीं किसी का खोट है ॥
माता पिता भर्तार बाँधव कर सकें ना ओट है २

दोहा

मैंने पूरब भव विषें अशुभ कर्म किये घोर।
सो अब आकर उदयमें फल देरहे करि जोर १

छंद

निन्दा किसी की करीहो अथवा किया अपवाद है।
तिसको उदय से भोगना पड़रहा कष्ट विषाद है २
पूरब समय कोइ वृत्त ले कर दिया मैंने भंग है।
उसका नतीजा आन कर ये हुआ मेरे संग है २
अथवा किसीसे बचन खोटे कह किया अपमान है॥
तिस कर्म ने आ आज ये मेरी घटाई शान है ३
पूरब जनम में पति बिछोहा किसी का मैंने किया॥
इसही लिये पतिसे विछोहा आज मेरा हो लिया ४

दोहा

या महाव्रत्ती मुनिन को निन्दा करी अघाय।
अथवा पूजा दान में विघ्न मचाय जाय १

छंद

उपकार होता किसी का दीया मैंने हटवाय के।
हिंसादि पाँचों पाप कीये फल मिलासो आयके १
बन नगर में अग्नी दई पशु पक्षियों को त्रास है।
मिथ्यात्व को सेवन किया पर बालकों नाश है २

अन छनाही पानी पिया भोजन किया था रातमें ।
ना अभक्ष से मानी अटक खाती फिरी हरसात में ३

दोहा

ना करने के काम थे सो सब किये सिहाय ।
ते करनी क्यों मिट सके अवश्य फलेंगी आय १

छंद

बलभद्र की रानी हुई रहती हमेशा महल में ।
राति दिन दाशी हजारों रहीं मेरी टहल में १
सो पाप बैरी ने मुझे फिरवा दई बन गहन में ।
इस दुख समुद्रकी थाह ना कैसे करूंगी सहन मैं २
होते भयंकर शब्द बनमें सो सहन कैसे करूं ।
कर कस कटीली भूमिमें चलि किस तरहसे पगधरूं ३
ये डाभ पैनी काँकरन में शयन कैसे करूंगी ।
ऐसी अवस्था होय फिर भी जीवती हो रहूंगी ४
अब भी हृदय फटता नहीं बनि रहा बज्र समान है ।
कैसी करूं कहां जाऊं किससे कहूं ना पहिचान है ५

दोहा

हाय राम क्यों कर तजी क्या था मेरा कसूर ।
बिना परिच्छा किये ही दुख दीना भरपूर १

छंद

है नाथ तुम करुणा पती क्या यही करुणा है सही ॥
महाभक्त लक्ष्मण चक्रधर क्या याद तुम को ना रही १
हा हा पिता हा मात मेरी क्या दशा ये हो रही ॥
माके जनाये वीर भामण्डल हू ने ना सुध लई २
इस भांति सीता बन विषै विलाप करि करि रो रही ॥
दीषै सहायक ना कोई गति टिटहरी कीं हो रही ३

दोहा

उस समयेके दुःख का को करि सके बखान ॥
जानें सीता सती ही या जानें भगवान १
अब आगे जो होयगा तिसका सुनो हवाल ॥
पुंडरीकिनी नगर का बज्रजंघ भूपाल २

चौपाई

उस वज्रजंघ महाराजाने अपना कुल कटक सजाया था ॥
हाथी पकड़न के हेत चला वो इस ही बन में आया था १
उस बनमें रूदन जानकी का सुनि वीर फिकरमें पड़ते हैं ॥
ना आगे कदम धराजावै मिल करके मसलत करते हैं २
हिसक जीवों से भरी हुई बिकराल बनीं में फस करके ॥
है कौन दुखी देखो भाई दुःख दूरि करो अन्दर धसके ३
थम गई सेन सारी वहाँ ही इत उत को पता लगाते हैं ॥

कुछ वीर उधरकी खोज लगा आ सीताके ढिग जाते हैं ४

(राजावज्रजंघ का सीताजी को पुंडरीकपुरमें लेजाना)

दोहा

राजा को भी रूदन सुनि दिलमें उपजी त्रास ॥
आज्ञा जोधन को दई जल्दी करो तलास १
अग्रेसर जो भटगये पूछन लागे ताय ॥
है देवी तू कौन है अपना हाल बताय २

चौपाई

शस्तर धारी पुरुषों को लखि सीता अत्यन्त डराती है ॥
आभूषण खोलि खोलि अपने सारे उनको पकड़ाती है १
यह देखि वीर कहने लागे है देवी क्यों डर करती है ॥
हम जेवरको क्याकरें मातत्तू धीरज क्यों नहीं धरती है २
विस्वास गहो मतिबिकल होउ हम जेवरके ना लेवक हैं ॥
सुनि रूदन तेरा आये हैं हम नृप बज्रजंघ के सेवक हैं ३
जिसकी कीरति है चौतर्फा वह सब भूपों में न्यारो है ॥
सम्यग्दर्शन और ज्ञान चरित्र तीनोंका निर्मल धारो है ४
शंका दिक दोष नहीं जिसकें वह जैन धर्मका धारी है ॥
है शरणागति प्रतिपाल महीपति जीवनका हितकारी है ५
वह निंद्य कर्म से दूर रहै दान में बड़ा दातारी है ॥
दुर्बल अनाथ जीवोंकी करता ढूंढ़ ढूंढ़ रखवारी है ६

परधन पर बनिता का त्यागी अन्याय नहीं कुछ करता है।
सम्वेग भाव का धारी वो संसार भ्रमण से डरता है ७
इस तरह भूप का गुण वर्णन सीताजी को बतलाया है।
इतने ही में नृप बज्रजंघ खुद चला वहीं पर आया है ८
हाथी से उतर विनय करके जा सीता जो सों कहता है।
है बहन तुझे यहाँ छोड़न की किसने की ये कठोरता है ९
उसका हृदय क्यों फटा नहीं क्यों कर हूआ अन्याई है।
है पुन्य रूपिणी कुल हालत देना मुझ को बतलाई है १०
किसकी पुत्री किसको·व्याही यहां पर क्या कारण आई है।
विश्वास धारि तन खेद छोड़ि चिन्ता दे ठीक बताई है ११

दोहा

सुनि कर बानी भूप की रोय लगी यों कहैन।
मो दुखिया की कथा है सुनि भाई अति गहैन १
जनक पिता दशरथ सुसर रामचन्द्र की बाम।
भामण्डल की बहन हूं सीता मेरा नाम २

छन्द

एक दिन बचन दशरथ ससुर ने केकई को दे दिये।
इससे भरत को राज दे नृप खुदगये तप के लिये १
गये राम लक्ष्मण बन विषे में भी उन्हों के संग में।
रावण कपट कर हर मुझे लेगया अपनी लंक में २

फिर राम लक्ष्मण कटक ले विद्या धरोंका चढ़ गये।
आकाश मारग होय समुद्र उलंघ जा लंका छये ३
लक्ष्मण वली ने चक्र से रावण को मारा समर में।
लेकर मुझे वहां से चले आगये अजुध्या नगर में ४

दोहा

भरत गये बन राज तजि तप करने के काज।
अष्ट कर्म भट जीत कर कीयो मोक्ष में राज १
मात केकई भी तभी जग से भई उदास।
होय अर्जिका चलि दई बनमें कियो निवास २

चौपाई

अजुध्या में राम राज करते इन्द्र के समान दिखाते थे॥
कुछ लोग वहां पर मिल करके ऐसे अपवाद बनाते थे १
रावण के घर में रही सिया सो रामचन्द्र अपनाई है॥
उन महाविवे की न्याय वन्तने यह क्या रीति चलाई है २
हम हूं यह रीति करें भाई यों लोगों ने ठैहराई है॥
तज तज मर्यादा करन लागे कहें हम को कहा बुराई है ३
तिस ही अवसर पर भीतर से मेरे मन में यह भाई है॥
निर्वाण क्षेत्र चैत्यलयों की यात्रा होवै सुखदाई है ४
दिल की हालत कुल रघुवर से दीनी मैंने बतलाई है॥
उन वार वार अनुमोदन कर के तैयारी करवाई है ५

इतनी कह हिलकी भरि रोई ना और कहन बनि आई है ॥
यह देखि महीपति बज्रजंघ ने धीरज दे समझाई है ६

दोहा

है बहना तू सब तरह आपहि है सुज्ञान ।
शोक रुदन को छोड़ दे होता आरत ध्यान १
गुरुओं से तै ने सुना जिन बाणी का भेद ।
इसीलिये ना उचित है करना बाई खेद २

चौपाई

संसार असार न सार कछू ये प्राणी भूला फिरता है ॥
मोह के लभेड़ा में आकर के मेरा मेरा करता है १
ना मोक्ष पन्थ को पहिचाना इस लीये दुःख उठाता है ॥
कहि मर्ण करै कहि जन्मलेय यों फिरता चक्कर खाता है २
जलचर थलचर नभचर होकर ये जीव जगतमें फिरता है ॥
कहि हाथ नहीं कहि पैर नहीं धरतीमें फिरै रगड़ता है ३
किसही के बिलकुल जीभ नहीं कोई नाक आँख बिनहोताहै॥
किसही कै कान नहीं होते कोई फिरै मन बिना थोथाहै४
कहि चिरता है कहिं पकता है कहि अल्प आयु धरि मरताहै॥
कोई दीरघ आयू पाकरभी ना स्वारथ ही कर सकता है ५
जो पशूयोनि में दुख होता सो कहने में नहिं आता है ॥
कोई काटे कोई बांधे कोई बोझा अधिक लदाता है ६

कहिं शीत सहै कहि धूप सहै कहि प्यास सहै भूका मरता ॥
कहिं छिदना है कहिं रँध है इस तरह आयु पूरी करता ७
ना मनुष्य योनिमें ही सुख है सब जगह नजर दुख आता है ॥
कोई निर्धन कोई रोगी कहिं सुत का वियोग पाता है ८
कोई घर नारी कलि हारी कोई को संतति खोटी है ॥
कहिं धन जन मिटजाने की ही लगि रही बिथाये मोटी है ९
है देवपने में भारी दुख दिन रात झुरा ही करता है ॥
छै महिने पहिले मरण देखि होती भारी विकलपता है १०
जो नर्क धरामें दुख होता सो कहने में नहिं आता है ॥
यातो जानें भोगन वाला या जानें केवल ग्याता है ११
इस तरह जीव चारों गतिमें दुख सहता भरता फिरता है ॥
चौरासी लाख योनि भीतर ना मिली कभी भी थिरता है१२

दोहा

यह विचार कर शुभ मते करो शोक सब दूर।
चलो हमारे नगर को होवो ना मजबूर १
मेरे तू है धर्म की बड़ी बहन उनमान।
चल कर मेरे घर रहो भामण्डल समजान २

चौपाई

इस तरह दिलासा देने पर सीता को धीरज आया है ॥
करि बार बार तारीफ भूप को ऐसे बचन सुनाया है १

है बन्धु तुही सच्चा सच्चा वासल्य अंग का धारी है ॥
भामंडलसे भी अधिक आनकर हुआ मेरा हितकारी है २
हो गया दुख दूरि मेरा सारा पा कर के तेरी सहाई है ॥
बहती हूई नैया नैं ने बनि खेवट पार लगाई है ३
इतनी सुनि नृपने हुक्म दिया सुन्दर पालकी मंगाई है
तिस पर सीता जी चढ़ करके पुर पुंडरीक में आई है ४
सुन कर नर नारी उमड़ पड़े दर्शन करने को आते हैं ॥
नाना प्रकार अस्तुति कर के भेंटादिक अर्घ चढ़ाते हैं ५
उस समें नगर की शोभा का वर्णन करना ही भारी है ॥
नृप की रानी परिवार सहित आई जानकी उतारी है ६
लेजा कर भीतर महलों में हरदम सेवा में रहती हैं ॥
कह शब्द मनोहर धर्मामृत का पान कराया करती हैं ७

दोहा

इसी तरह रहते वहाँ करै सिया गुजरान।
अब सेनापतिका जिकर सुनो भविक धरिध्यान १
छोड़ि सिया को बन विषै आया अजुध्या धाम।
रामचन्द्र के चरण में आ कर करी प्रणाम २

चौपाई

करि नमस्कार कहने लागा जो नाथ आपने बतलाया।
उसके अनुसार सीयाजी को मैं छोड़ि अकेली बनआया १

लेकिन है भारी गम मुझ को वो जीवैंगी वहाँ कैसे है ॥
अब सुनो प्रथम वह बतलाऊं कह दई मात ने जैसे है २
मुझको तो नाथ छोड़ि दीनी यह कहती हूं बतला करके ॥
मति जैन धर्म को तज देना और की बात में आकरके ३
लोक तो बिना समझे बूझे निर्दोष को दोष लगाते हैं ॥
लेकिन न्याई फिर भी उसको हर तरह खूब अजमाते हैं ४
किसही के कहनेमें आकर ना उसी बात पर चल पड़ना ॥
अपनी बुद्धी निज़ बिचारसे सब कार्य यथारथ ही करना ५
मेरे बिछुड़ेका सोच कभी मनमाहिंकछू भी नहिं करना ॥
जैसे सम्यक्त रहै निर्मल सो भाव हमेशा ही धरना ६
मेरा तजना तो इस भवमें है थोड़ा सा ही दुख कारी ॥
सम्यग्दर्शन के छूटे से हों जन्म अनन्ते दुखकारी ७
इस जगत बिषैं धन जन बाहन राज्यादिशुलभ मिलजाते हैं॥
लेकिन सम्यक् ही दुर्लभ है यों केवल ज्ञानी गाते हैं ८
इस राज काज में पाप अधिक कर नर्क धरा में जाते हैं ॥
हो उर्द्धगमन उन पुरुषों का जो सम्यग्दर्शन पाते हैं ९
जिसने इसको पालीया है पूरी कर लई कमाई है ॥
गया जन्म मरणसे छूटि जायकर शिवकी सुन्दरी ब्याही है१०

दोहा

इस प्रकार से मातने कहा मोहि समझाय ।

भिन्न भिन्न कर आपको सो सब दई सुनाय १

अब बतलाऊं हाल अरू सहै जानकी ताय।

उस बन बिंकट उजाड़ में होगा कौन सहाय २

चौपाई

फिरते हैं हिसक जीव तहाँ भालू बघेर चीते त्यारी ॥

मांते हाथी तहां घूमि रहे गरजे हैं सिह भयकारी १

फुंकार भुजंगन की बन के वृक्षों की खाक बनाती है ॥

पानी की झीलों में सेना वाराहों की दिखलाती है २

मर्कट अपनी चंचलता कर तरुओं को तोड़ गिराते हैं ॥

गीदड़ उलूक के शब्द भयंकर चौतर्फा सुन पाते हैं ३

ना मिलता वहां शुद्ध मारग जा वेलों में उलझाते हैं ॥

डाभ की अनी पैंने कंकर चुभते वेदना बढ़ाते हैं ४

शरदी गरमी और भूक प्यास की भारी वहां असाता है ॥

इस तरह आपदा में फंस कर कैसे जीवैगी माता है ५

दोहा

सुनि सेना पति के बचन करी राम उर खेद।

देखो मेरी निठुरता लिया कछू ना भेद १

दुष्ट जनोंके बचन पर अपना किया बिगाड़।

फिर,वन संकट याद कर खाके गिरे पछाड़ २

छन्द

कुछ देर में मूर्छा जगी करने लगे विलाप हैं।
कोमल कमल की सी कली कैसे सहै सन्ताप है १
हा जानकी तू बन विषैं कैसे अकेली रहैगी।
मेरी विरहका दुःख दुखिया किस तरह से सहैगी २
ना संग कोई दूसरा बन में सहाई और है।
आहार पानीका ठिकाना होयगा किस तौर है ३
होगा गर्भ का खेद भारी तिसै कैसे सहैगी।
मंदिर मकान बिना दुखारी किस जगह पर रहैगी ४

दोहा

नहीं सहाई है कोई नहीं पास सामान।
महा भयंकर बन विषैं हो कैसे गुजरान॥

छंद

मेरे ही हित के वासते चौदह बरष बन में फिरी।
सो मो निठुर ने आज देखो वो सती न्यारी करी १
आकर बचन आलाप कर तू जानती सब बात है।
तेरे बिना ये चित्त मेरा बना कायर जात है २
यूथ-से बिछुड़ी मृगी की तरह तू बन में फिरै।
बन भूमि घोर कठोरमें चलि किस तरह से पग धरै ३
काँटे व कंकर डाभ की पगमें चुभेगी कोर है।

हा देवि तू कैसे सहै यह वेदना अति घोर है ४

दोहा

म्लेछ भील बनके विषैं क्रूर कठोर कुजान।
जिनको कृत्य अकृत्यकी तनक नहीं पहिचान १

छंद

सो भयंकर पल्ली विषैं वो पकड़ कर ले जायँगे।
पहले दुखों से भी वहाँ अति वेदन उपजायँगे २
नाना तरह के कष्ट मोबिन तुझे सहने पड़ेंगे।
सिहादि हिसक जीव तेरे पकड़ टुकड़े करेंगे २
दावाग्नि ज्वाला बन बिषै जलती रहै हर ठौर है॥
जिसमें घिरी जलजाय बचना होगया किस तौर है ३
होकर थकित गिरजाय कोई कुचल हाथी जायगा।
अथवा बनी का व्याघ्र कोई आ पड़ी को खायगा ४

दोहा

सूरज की आताप से पिघल लाख सी जाय।
मेरे मनकी बासिनी तेरी सूरत हू मिटजाय १

छन्द

ना मो सरीका निर्दई ना तोसरी को शील है।
इस तरह पश्चाताप की चुभती हृदय में कील है १
पहले हरी हूई को सुध मिल गई जलदी ही हुती।

अब ना भरोसा मुझे है जिन्दी मिले सिता सती २
हे वीर सेनापति बता सच छोड़ि बन ही में दई।
या राखि कहि शुभ ठौर पर मोसे बता ऐसे कही ३

दोहा

रामचन्द्र के बचन सुनि सेनापति दुख पाय।
मौनसाधि गया बैठकर गरदन लई झुकाय १

चौपाई

तब सत्य रामने जान लई ये छोड़ि अवसि बनमें आया ॥
हा सती हाय सीता सीता यों कहते हुऐ गस खाया १
यह जिकर सुना लक्ष्मणजी ने तो दौड़ वहां पर आये हैं ॥
करिके सचेत श्री रामचन्द्र को बार बार समझाये हैं २
है देव छोड़ि आकुलता को हिरदे धीरज धरना चहिये ॥
पूरबका कीया कर्म फला आ खोट किसे किसको कहिये ३
जो सुख दुख जैसा होनहार वैसा ही कारण पटता है ॥
या तो वह वहाँ लिवाय जाय या खुद ही आन चिपटताहै ४
चाहै नभ में लेजा उड़ाय अथवा जा बन में डारै है ॥
जब होय पुगयकी उदय आनकर ना कोई बाल बिगाड़ै है ५
सूली सिज्या हो जाती है बिष धर की माला बनती है ॥
पर्वत से चोट लगे न उदय जब होवै पुगय प्रकरती है ६
इतनी कह खुदही व्याकुलहो सीताकी सुधि कररोता है ॥

जैसे तुषार के पड़ने से पंकज झुकि नीचा होता है ७
हा सीता मात कहाँ गई तू क्यों सुरति भूलिगई मेरी है ॥
दर्शन अभिलाषी सेवक को अभिलाषा लगरही तेरी है ८
बिन चन्द्रमा को उदय भये निशि रहै हमेसा झीनी है ॥
तैसे ही बिन माता तेरे हो रही अयोध्या रोनी है ९
ऐसे विलाप करते हूए फिर लगे राम को समझाने ॥
तजि शोक देव समता धारो होगी वही लिखदई विधनाने १०

दोहा

सीता जाने की प्रभू है सबही कै पीर।
पुरुजन परिजन प्रजाजन रो रहै होय अधीर १
घबड़ाने से होय ना कार्य सिद्ध महाराज।
धीरज वानों के सभी बिगड़े सुधरें काज २

चौपाई

तजि सोच राज का काज करो सीता को ढूढ़ बुलावेंगे ॥
पुराय के प्रभाव उसे बन में ना कोई विघ्न सतावेंगे १
इसतरह बोहौत समझाने पर कुछ धीर रामको आया है ॥
तब भद्रकलश भंडारी को आज्ञा दे पास बुलाया है २
है भाई सती सिया जी का जो दान हमेसा होता है ॥
वह उसी तरह रहना चहिये ना होय किसी विधि कोताहै ३
आग्या प्रमाण करि भंडारी अपने मुकांम पर आता है ॥

नौं महिने तक इच्छानुसार अतिथों को दान बटाता है ४
राम के हजार आठ रानी सेवा में निशि दिन रहती हैं ॥
फिर भी सीताके गुण समूह की लहर हृदे में बहती हैं ५
सीता सीता धुनि वार वार मुखमें से बचन निकलते हैं ॥
उठ उठ कर देखें दशोंदिशा पर समाचार ना मिलते हैं ६
सोते में स्वप्न बिषैं देखें सीता के बन के फिरने को ॥
रजसे मंडित हो रहा बदन ना मिलती जगै ठहरने को ७
देखते गुफा में पड़ी हुई देखें मारग में चलती है ॥
हिसक जीवों से डरी हुई देखें बनबीच बिलखती है ८
इस तरह हालियत सीता की अवलोकन ऐसें करते हैं ॥
सीता सीता कह शब्द सेज से चौंक चौंक उठ पड़ते हैं ९
फिर बैठ हथेली पर शिर धर हो शोकवान से जाते हैं ॥
जिसका वर्णन ना होसकता बस यों ही समय बितातेहैं १०

दोहा

लक्ष्मण के उपदेश कर छत्रों के श्रद्धान ।
शोक छोड़ि कछु धैर्यधरि लगे धर्मके ध्यान १
दोनों भाइयन में सदां रहै अखंडित मीति ।
शुद्धा चर्णी बन चलें देखि न्याय और नीति २
चक्र सुदर्शन लक्षण पर हल मूसल गहिराम ।
परजा की रक्ष्या करें सुख से बैठे धाम ३

पुण्य उदय करि जगत में हो रहा खूब प्रकाश।
इन्द्रों की सी सम्पदा भोगें करें विलास ४
मान अयोध्या नगर को हो रहा स्वर्ग समान।
दोनों भाई राजते ज्यों सुधर्म ईशान ५

(लवरण कुश का जन्म)

दोहा

प्रणमि परम रस शान्तिको प्रणमि धर्म गुरु देव।
वरणों सुजस सुशील को करि शारद की सेव १
और बतलाऊं आपको क्षत्रापन की सार।
वीर पुरुष चित दे सुनें कायर हों लाचार २
रामलक्ष्मणतो अवध विच भोगें भोग विलास।
पुंडरीकिनी पुर विषै सीता करै निवास ३
भूपतिका परिवार सब राति दिना रहै संग।
सीताकी सेवा विषैं करें न आज्ञा भंग ४
गर्भ मास पूरण तहाँ बसि कर कीये मात।
श्रावणकी पुन्यों शुकल श्रवण महूरत साथ ५
पुत्र युगल जनती भई शशि सूरज उनहार।
भूप महल में हो रहे भारी मंगल चार ६

चौपाई

बटि रही बधाई नगर में घर घर में हर्ष मनाते हैं॥

तिस समें महीपति मगन होय निज पुरको खूब सजाते हैं१
बाजों की घोर मनो नभ में बादल ही घोर मचाते हैं ॥
याचक जन आशा पूरण कर गुण गाते हूऐ जाते हैं २
उस समें वहांकी छबि वर्णन ना लिखी कलमसे जातीहै ॥
मानों नगरी ही नांच उठी ऐसे दिखलाई आती है ३
धरि दीये नाम लवण अंकुश दिन दिन बृद्धिको पाते हैं ॥
बालापन की क्रीड़ा कर कर माता को सुख उपजाते हैं ४
फिर बालापने से बड़े हुए नृप विद्या ध्ययन कराते हैं ॥
पुण्यके उदय उनके घर पर एक चुल्लक जी आजाते हैं ५
साधुके समान वृत्ति वाला महा विद्याका अधिकारी था ॥
सारे परिग्रहका त्यागन कर एक खंड वस्त्रका धारी था ६
सुम्मेर गिरी पर वंदन को तीन्यों ही संध्या जाता था ॥
उत्तम अणुवृत्त पाल करके तप की महिमा दर्शाता था ७
सारीही कला याद जिसको जिनमनका रहस सबाया था ।
सो आहारके निमित्त भ्रमता सीताजी के घर आया था ८
आया च्चुल्लक को जानि धर्मिणी भक्ती कर ठैहराती है ॥
करि इच्छाकार प्रथम उसको फिर शुद्ध अहार कराती है ९
दोनों पुत्रों को लाकर के च्चुल्लक जी को दिखलाती है ॥
अष्टांग निमित्त ग्यान धारीको देखि मोहव्वत आतीहै १०

दोहा

यद्यपि क्षुल्लक जी महा चित्त विरक्त विराग।
तदपि सुतन के गुणन को लखि हूऐ अनुराग १
रहकर वहाँ पर कछुक दिन विद्या सकल पढ़ाय।
निपुण कर दिये सब तरह शास्त्र शस्त्र सिखलाय २
चाँद सूर्य सद्रश दोऊ पुण्य उदय बलवान।
चौतर्फा के महीपति तिनकी मानें आन ३

चौपाई

दुष्टों को काल समान सदा रहैं दीनों के हितकारी थे ॥
और बज्रजंघ नाराच संहनन के ही दोनों धारी थे १
दोनों सम्यग्दर्शन धारी जिन मारग पर चलने वाले ॥
सच्चे गुरू देव शास्तर की हर समय विनय करनें वाले २
ना बलका पता कछू जिनका नित न्याय नोतिसे चलते थे ॥
शरणागति को सहाय करते बैरिन के मद को हरते थे ३
लक्ष्मी चेरी हो कर रहती यश आगे आगे चलता था ॥
और क्षमा धर्मको देखि क्रोध दोनों हाथोंको मलता था ४
मन को थिरता को देखि देखि पर्वत सुम्मेर लजाता था ॥
रूपको निरख कर काम देव मन बार बार सकुचाता था ५
मान तो हमेसा दूर रहै छल पास कभी ना आता था ॥
शीलका प्रभाव देखि जिनका व्यभचार दूर भगजाता था ६

सत्यने समझ कर हित अपना आ इनकी शरणा लीनी है ॥
मिथ्यात्व भाग गया डर करके ना नजर इधरको कीनी है ७
बलकी तारीफ उन्हों के की कहि कौन सपूरी बतलावै ॥
है मुख्य बात सारी ऐही महीमा कथनी में ना आवै ८
देवों की तरह भोग भोगें पुर पुंडरीक में फिरते हैं ॥
तव बज्रजंघ भूपाल व्याह इनके की चिन्ता करते हैं ९

दोहा

अब दोनों के व्याह को कहूं यथारथ गाय।
सुनो ध्यान धरि भविक जन दिलको संशय जाय १

वार्ता

अथानन्तर अति उदार क्रिया विषैं योग्य अति सुन्दर तिनको देख कर बज्रजंघ इनके परणायवे के विषैं उद्यमी भया, तव शशि चूला नाम पुत्री लक्ष्मी राणी के उदर विषैं उपजी सो बत्तीस कन्या सहित मदनलवण को देनी बिचारी और अंकुश कुमार का भी विवाह साथ ही करना सो अंकुश योग्य कन्या ढूढ़वे को चिन्ता बान भया फिर मन में बिचारी प्रथ्वी पुर नगर का राजा पृथु उसके राणी अमृतवती उसकी पुत्री कनक माला चन्द्रमा की किरण समान निर्म्मल अपने रूपकरि लक्ष्मी को जीतै है वह मेरो पुत्री शशि

चूला समान है यह विचार तापै दूत भेज्या सो दूत बिचक्षण पृथवी पुर जाय पृथु से कही जो लग याने कन्या के याचने के शब्द न कहै तो लग इसका अति सनमान किया और जब याने कन्या के याचने का वृत्तान्त कहा तब वह क्रोधायमान भया और कहता भया तू पराधीन है और पराई कहाई कहै है तुम दूत लोग जल के धोरा समान हो जिस दिशा चलावै ताही दिशा चलौ तुम में तेज नहीं बुद्धी नहीं, जो ऐसे पाप के बचन कहै उसका निग्रह करूं पर तूपराया मेरा यंत्र समान है यंत्री बजावे त्यों वाजै इस लिये तू हनिवे योग्य नाहीं, है दूत सुनिः—

दोहा

कुल विद्या, बल, देश वय शील रूप धनवान।
कन्या ता को दीजिये जो हो आप समान १
ये नव गुण जामें मिलैं वह वर कन्या योग।
अन्यन कन्या दीजिये कहैं ज्योतिपी लोग २

चौपाई

उनके कुल का है पता नहीं कैसे कन्या दीनी जावै॥
ऐसी निर्लज बात कब हूं ना क्षत्रीन के कुल में भावै १
पुत्री को हरगिज ना दूंगा चाहै वो चढ़ कर आजावै।

कन्या के बदले हां उसको चाहै तो मृत्यु लिवा जावै २
सुनि पृथु महीपकी बानीको वह दूत पलट कर आता है ॥
सारी बातोंको ज्यों की त्यों कहि व्योरे वार सुनाता है ३
यह सुनि के भूपति बज्रजंघ अपनी सेना सजवाता है ॥
पृथ्वीपुर के नजदीक जाय करके मुकाम लगवाता है ४
वहाँ से कुछ चतुर पुरुष भेजे पृथु महीपके समझानेको ॥
फिरभी उसने कर दई मना अपनी कन्या भिजवाने को ५
तब बज्रजंघ महाराजा ने वहाँ देश लूट करवाई है ॥
रक्षक वहां के को पकड़ बांध कर लीया कैद कराई है ६
ये हौला सुनि कर पृथु महीप अपनी सेना सजवाता है ॥
अपने साथी भूपालों को दे दे कें पत्र बुलाता है ७
नृप बज्रजंघ ने पत्र लिखा घर भेजा पुत्र बुलाने को ॥
आजावें जल्द न देर करें बैरी से समर मचाने को ८
ले पत्र दूत ने कूंच किया पुर पुंडरीक में आया है ॥
जा बज्रजंघ के पुत्रों ढिग सारा अहवाल सुनाया है ९
सुनते ही वीर तैयार हुऐ कूंच का नगाड़ा बाजै है ॥
दल सज करके आखड़ा हुआ मानिंद समुदके गाजै है १०
सुनि सामन्तोंकी गर्जनको लवकुश नें चौंधा खाया है ॥
निकट के रहन वाले पुरुषों से ऐसे बचन सुनाया है ११
ये आज कुलाहल कैसा है ना भेद कछू पड़ पाता है ॥

यह सुनि एक पुरुष हालियतको कहि भिन्न २ समझाता है१२
महाराज आपकी शादी की नृप ने मन में ठहराई है॥
पृथु महीप पै कन्या मांगी ना दई हो पड़ी लड़ाई है १३

दोहा

अपनी रक्षा के लिये पुत्रन रहा बुलाय।
इसलीये ये कटक सज समर करन को जाय १
समाचार ये सुनत ही गया वीर रस छाय।
ज्यों भुजंगकी पूंछ को दवे न क्रोध डटाय २

चौपाई

सुनि आज्ञा भंग महीपतिकी रिसका ना रहा ठिकाना है॥
दोनों सजकर तैयार हुए लिया पहरि समर का बाना है १
तब बज्रजंघ के पुत्रों ने आकर इनको समझाया है॥
और भी हर तरह लोगोंने कह कर लोटाना चाहा है २
माता ने भी आकर इनको हर तरह खूब समझाया है॥
है लाल वैस थारी बारी ना समय समर का आया है ३
सुनि कर माता की बानी को दोनों ने अर्ज गुजारी है॥
अग्नि का पतंगा छोटा सा बड़ बड़े बनों को भारी है ४
सिह का पुत्र छोटा ही तो घुस हाथी दल में जाता है॥
अपने छल बल से हनें उन्हें ना मार उन्होंकी खाता है ५
होगया बड़ा तो स्वारथ क्या जो कायरता दिखलाता है॥

गीदड़ की तरह छिपा घरमें कुल को बट्टा लगवाता है ६
हम मात आपकी किरपा से जा विजय पताका लावेंगे ॥
उन खद्योतों की सेना को बन कर के भानु छिपावेंगे ७
है वीरों की मरजाद यही अवसर पाकर के नहीं हटना ॥
दुश्मन को आता देख समरमें सन्मुख हो जाकर डटना ८
इस तरह देख हट माताने लखि सुभट हुकम देदीना है ॥
होवै जा जीत समर अंदर कह हर्ष शोक ना कीना है ९
माता से पा आसीस आकर अपनी तैयारी करते हैं ॥
स्नान दान भोजन करके फिर भूषण बसन पहरते हैं १०

दोहा

प्रथम मन बच काय करि सिद्धों का धरि ध्यान।
नमस्कार करि माता को फिर कर दिया पयान १
भरा वीर रस बदन में फड़कन लागें अंग।
बैठि रथों में चल दिये भूप सुतन के संग २

चौपाई

कहिं ठहरे कहीं नहीं ठहरे धावा देकर के चलते हैं ॥
रस्ते में पाँच दिवस चल कर जा बज्रजंघ से मिलते हैं १
दुश्मनके दलको देखि भूप पृथु अपना कटक सजाता है ॥
आये थे देश देश के नृप सबही को संग में लाता है २
दोनों लँग से मुट भेड़ हुई अड़ वीर परस्पर लड़ते हैं ॥

शस्त्रों की होली होन लगी कटिवीर समर में गिरते हैं ३
लव अंकुशवीर धनुर्धारी दुश्मन के दल में आते हैं ॥
जैसे किसान खेती काटै मांग की गांग फैलाते हैं ४
लव कुश के बाणोंके आगे ना पेश किसी की खाती है ॥
होती परलै सो देखि पृथु की सेना भागी जाती है ५
बाणों के बाड़े बाँध दिये ना भानु दिखाई आता है ॥
मानिन्द आकके फूलो के दल उड़ता सा दिखलाता है ६
पृथु भूप सहाय रहित हूआ तब भगनेको मन कीया है ॥
इतने में लवकुश वीरों ने आ घेरि अगाड़ी लीया है ७
तू बड़े कुलांका बन करके क्यों समर भूमि से भगता है ॥
हम हीन कुलिनके आगे तू क्या भगता अच्छा लगताहै ८
रहजरा खड़ा देखतो सही हम अपना कुल दिखलाते हैं ॥
सेना के सहित अभी तुझ को यमपुर की शैर कराते हैं ९
सुनि भूप पृथु भगता हूआ लौटके पिछाड़ी आया है ॥
कर जोड़े शीश नवा करके ऐसे कहि बचन सुनाया है १०

दोहा

अब तक तो ये आपका मिला न मुझ को चोस।
इसलीये आज्ञान बस किया आप पर रोस १
आज खुलासा लखपड़ा वीर आपका धीर।
होना था सो हो गया क्षमा करौ तकशीर २

चौपाई

वीरों के कुल की जांच आय कर समर भूमि में होती है ॥
बांणी के द्वारा कही सुनी दिखलात हमेसा थोती है १
कोइ पूरब पुराय किया मैंने सो आज उदय में आया है ॥
तुम से बड़े भागी पुरुषों का जो दर्शन मैंने पाया है २
इस तरह प्रसंशा वार वार भूपति ने मुख से कीनी है ॥
अतिदेखि अधीन तहाँ तिसको कुमरोंने धीरज दीनी है ३
इतनेही में नृप बज्रजंघ चलि सुतन सहित तहां आया है ॥
और भी अनेक महीपों ने आ आके मान बढ़ाया है ४
सारी समाजके सहित तिन्हें प्रथु भूप नगर में लाया है ॥
कुशकुमर संग निजकन्याको लाकर के व्याह रचाया है ५
दोनों भाई वहांही से फिर दिग विजय करनको जाते हैं ॥
फिरथम तो मगध देश जीता फिर मालव देश दबाते हैं ६
जीते हैं अंग बंग दोनों आपोदन पुर में जाते हैं ॥
कोशल गंधार कलिंग जीति गंगा तट जंग मचाते हैं ७
कैलाश तलहटी के राजा चौतर्फा तिन्हें नबाते हैं ॥
लंपाक देश में जा करके करण से युद्ध ठहराते हैं ८
उत्तर दिशाके बस किये भूप चढ़ि कच्छ देश पर जाते हैं ॥
जीते हैं अनल अचल जाके जो भारी वीर कहाते हैं ९
कहां तक इसको बतलाऊंगा जो वर्णन है सो थोड़ा है ॥

है अखीर ये यूं आ करके ना किसी सुभटने जोड़ा है १०
कोई तो दहसत के मारे तजि देश दूर भगजाते हैं ॥
कोई महमानी करने को ले नगर आपने जाते हैं ११
कोई मारग में आ आ कर आगे से भेंट दिखाते हैं ॥
कोई बिना बुलाये ही आके आज्ञा कारी बन जाते हैं १२
इस तरह वीर चौतर्फा फिर वीरों का बल अजमाते हैं ॥
महि ऊपर जीति महीपों को अपना डंका बजवाते हैं १३

दोहा

भूप अनेकों दूर तक आवें तिनके लार।
मारग में करते चलें कथा अनेक प्रकार १
सबका मन हरते हुऐ बज्रजंघ के संग।
पुंडरीकपुर को चले बंद कराई जंग २

चौपाई

राजों ने जो जो भेंट दई सब ही को संग में लाते हैं ॥
भारी विभूति के साथ जन्म नगरी के समीप आते हैं १
रानिनके सहित सती सीता सतखने महल पर बैठी थी ॥
धूल के पटल उड़ते देखे तो वार वार यों कहती थी २
इस दिशा माहि रजका उड़ना ये आज होरहा क्योंकर है ॥
यह सुनि कर रानी कहन लगी आरहा भूपका लशकर है ३
स्वामिन ये तेरे सुत दोनों पृथ्वी को बस कर आते हैं ॥

हो रहे मगन योधा मनमें हाथी घौड़े दौड़ाते हैं ४
कुमरों का आना सुनकरके बट रही चौतर्फ बधाई है ॥
अपने अपने दर्वाजों पर सब ने शोभा कर वाई है ५
मोतिन की झालर लटक रही बंदनवारें बंधवाये हैं ॥
पचरंग धुंजा फैहराय रही सुन्दर कलशा चढ़वाये हैं ६
घर और दुकानों के ऊपर रंग भांति भांति कर वाये हैं ॥
बाट में निरत और गान होय घर घरमें मंगल छाये हैं ७
इतने में ही आ कुमरों ने माता को शीश नवाये हैं ॥
उरसे लगाय कर बार बार अति ही आनन्द मनाये हैं ८
यह कथा यहाँ हुई पूरी आगे को और बनाई है ॥
ज्यों रामचन्द्र और लक्ष्मण से अजुध्यामें होय लड़ाई है ९

दोहा

नरतन पा नहिं तप कियो धनपा कियो न दान ।
ग्यान पाय सुध आचरण किये न पशू समान १

(लव कुश की अयोध्या पर चढ़ाई)

दोहा

चांद सूर्य सम बन्धु दोउ जगमें करें प्रकाश ।
इन्द्र सारिखे भोगि सुख करें भूप घर वास १
एक दिन अजुध्या नगरमें नारदजी ने आय ।
सेनापतिसे सों यों कही सीता कहां बताय २

तब सेना पति जोड़ि कर कहन लगा यों बात ।
सिंह नाद अटवी बिषैं छोड़ी सीता मात २

चौपाई

यह सुनि नारद जो विकल होय चौतर्फा ढूढ़ मचाते हैं ॥
बन पर्वत गुफा देख डाली ना पता सिया का पाते हैं १
ढूढ़ते ढूढते एक दिना पुर पुंडरीक में आते हैं ॥
ताके बाहिर बन में क्रीड़ा करते कुमरों को पाते हैं २
कौतुक इनके को देखि हर्ष कर पास चले ही जाते हैं ॥
क्षुल्लक जी समझि इन्हें दोनों चर्णों में शीश नवाते हैं ३
देकर असीस नारदजी ने गुण राम लक्ष्मणका गाया है ॥
उनकी सी लक्ष्मी होय तुम्हारैं ऐसे बचन सुनाया है ४
सुनि राम लक्ष्मण का यश दोनों नारद से ऐसे कहते हैं ॥
हे देव हमें बतला दीजे वो कौन कहाँ पर रहते हैं ५
किस कुलमें जन्म उन्होंका है क्या गुण सो सारे बतलाओ
आचर्ण उन्हों का कैसा है कह भिन्न सब दर्साओ ६
यह सुनि नारदजी कहन लगे यह कठिन बात सुनलो भाई ॥
है कौन जगत में बुद्धिमान उनकी महिमा देवतलाई ७
चाहै पर्वत को उखाड़ ले बाहों से सागर तिरजावै ॥
पर राम लखन के गुन समूह का कोई पार नहीं पावै ८
कोइ बहुत दिनोंतक कहा करै वा सहस बदन करिके गावै ॥

फिर भी चरित्र सारा उनका ना पूरा होने में आवै ९

दोहा

पर अब थारी कहन से कहूं कछुक यहां सार।
ताको चित देकर सुनो दोनों राज कुमार १
नगर अयोध्या में वसें दशरथ जी भूपाल।
इक्ष्यक बंश सिरोमणी तिन के हैं वो लाल २

चौपाई

राम लखन और भरत शत्रुहन चार हुए अवतारी हैं ॥
बलवान न दूजा उन सरका धर्म के धुरंधर धारी हैं १
तातके वचन पालन कारन तजि राम अवधपुर दीना था ॥
लक्ष्मण सीताको संग लेय पृथ्वी पर बिहार किना था २
दंडकवन में जाके पहुंचे जो बड़ा भयंकर भारी है ॥
पड़दूषण से तहाँ युद्ध हुआ सीता हरिगई विचारी है ३
बानर बंसी खग राजों को ले लंक पुरी को घेरा है ॥
रावण को मारि सिया लेके अजुध्या में किया वसेरा है ४
दशरथ तो प्रथमहि मुनि हूए भये भरत रामके आने पर ॥
केकई अर्जिका होय गई ना रुको बोहोत समझाने पर ५
अवध में रामजी राज करें वो सब राजों में भार हैं ॥
लक्ष्मण के सहित न्याय वेता धर्म के बढ़ावन हारे हैं ६
लक्ष्मण पर चक्र शुदर्शन है छह शस्त्र और भारी भारी ॥

राम पे चारही शस्त्र जिन्हों से करें प्रजा की रखवारी ७
एक एक शस्त्रकी सहस सहस नित देव करें हैं रखवारी।
तिन के ही बलसे आय नवामें शीश बड़े छत्तर धारी ८
जिन परजा के हितके कारण सीता जी को बनमें तारी ॥
उस रामचन्द्र को वसुधा के जानते सकल ही नरनारी ९

दोहा

राम लखनके सुयश का कहां लगि करूं बयान।
स्वर्ग लोक के देव तक जुरि मिलि करते गान १
तब अंकुश कहने लगा सुनों प्रभू अरदास।
किस कारण से जानकी बन में दई निकास २

चौपाई

कुश के बचनों को सुनते ही नैनों से नीर हूआ जारी ॥
रोते रोते नारद जी ने कह कथा सिया की विस्तारी १
है भाई सुनो सती सीता निर्मल कुल जनक दुलारी है ॥
पतिव्रता गुणवती श्रावक के आचरण पालने वारी है २
साक्ष्यात मनों जिन वाणी हो धर्म के बढ़ावन हारी है ॥
सो पूर्वो पार्जित कर्मों ने आ घेरी मात विचारी है ४
दुष्टों ने कही राम से आ झूठा अपवाद लगाया है ॥

लक्ष्मण—संख, चक्रशुदर्शन, गदा, खड्ग, दंड, नाग सज्या,
कौस्तुभ मणी ॥राम॥ हल, मूसल, गदा, रत्न माला।

इसलिये रामजी दुखी हुऐ बन में ताको भिजवाया है ५
बनका वर्णन इस पुस्तक में पहले ही सब बतलाया है ॥
इस कारण नारदके कहने को यहां पर ना दुवराया है ६
इस तरह विपति सुनि माताकी पुत्रोंको गुस्सा आया है ॥
रामने सिया को बन भेजी ये भला न कार्य उपाया है ७
अपवाद निवारण के कारण और भी अनेक घनेरे हैं ॥
यह ज्ञानवान का काम नहीं करते कुबुद्धि के प्रेरे हैं ८
अब नाथ कृपाकर बतलाओ वो अजुध्यानगर कहांपर है ॥
हम राम लखन से युद्ध करेंगे अवसि वहाँ पर जाकर है ९

दोहा

नारदसे कुल हाल सुनि कही भूप सों आय ।
देश देश के छत्रपति मामा लेउ बुलाय १
पत्र पठावहु सबन पर ले ले सेना संग ।
आजावें सज कर जलद होय राम से जंग २

चौपाई

अपने भी योधा छांटि लेउ जो दीपें वीर करारे हैं ॥
उनको ही संग लिवाय चलो ना रण से हटने वारे हैं १
इस तरह मन सुआ बाँधि सही दोनोंने निश्चय कीया है ॥
यह हाल लड़ाई का सारा सीता जी ने सुन लीया है २
हो रही दुखी ना धीर बंधै नैनों से नीर वहाती है ।

दोनों लंग नाश कुटमहीं का सुधि करि२ के बिलखाती है ३
इस तरह रुदन सुनि माताका सुत दोनों वहाँ पर आते हैं ॥
चर्णों में शोश नवा करके कर जोड़ै विनय सुनाते हैं ४
हे मात बताओ जल्द हमें किसने कर दिया अनादर है ॥
सर्प की जोभ से खेल करै ना मरने का उसको डर है ५
है कौन देव दानव मनुष्य जो तुम्हे असाता उपजावै ॥
बतलादो मात जल्द हमको वो अभो किये का फलपावै ६
इस तरह सुतों की सुन करके रोती हुई यों कहती है ॥
ना आग्या लोप हुई मेरी ना करी किसी ने सखती है ७

दोहा

पिता तुम्हारे से कुंमर युद्ध तुम्हारा होय ।
इस ही कारण रो रही बंधै न धीरज मोय १
यह सुन कर पूछन लगे दोनों शीश नवाय ।
पिता हमारा कौन है माता देऊ बताय २

चौपाई

तब माता ने सब हाल कहा प्रथम तो बंस बताया है ॥
फिर धनुष यग्यकी रचना कहि साराही हाल सुनाया है १
बिरतन्त कहा बन जानेका और दंडक बन से हरने का ॥
रामको चढ़ाई करने का बतलाया रावण मरने का २
घर आने पर अपवाद हूआ राम ने निकाला दे दीया ॥

नारखा छिपात्र जरासाभी सब ज्योंका त्यों ही कह दिया ३
फिर बज्रजंघ से मिलने की सारी ही कथा सुनाई है ॥
उसके आदर की महिमा को कह बार बार समझाई है ४
भामण्डल भाई के समान इसका घर मैंने जाना है ॥
सन्मान तुम्हारा हुआ यहाँ सो नहीं किसीसे छाना है ५
श्री रामचन्द्र के तुम सुत हो वै सब राजों में भारी हैं ॥
पुण्यके प्रताप जिन्होंकी निशिदिन देव करें रखवारी हैं ६
है छोटा भाई लक्ष्मण जी जो बलवानों में आला है ॥
चाहै तो प्राण निकल जावें ना रण से हटने वाला है ७
ना जानें थारी या उनकी मैं अशुभ वार्ता सुन पाऊं ॥
इसलीये विकलप मुझको है हा कहा करूं कितको जाऊं ८

दोहा

सुनि जननी के बचन को खुशी हुऐ दोउ भ्रात ।
हाथ जोड़ कहने लगे सुनों मात म्हारी बात १
पिता हमारे धनुर्धर जिनकी देव सहाय ।
बड़े बड़े कारज किये कीर्ति रही जगछाय २
लेकिन तुमको बन बिषैं दीनी माता डारी ।
यह न भला उननें किया हम रोपैंगे रारि ३

चौपाई

यह सुन कर सीता कहन लगी हे पुत्र बात मेरी मानों ॥

वह बड़े तुम्हारे गुरु जन हैं ना बैर कभी उनसे ठानों १
तजिक्रोध विनय कर दोनोंही जा पिता चरणमें शिर नाओ
ये तौ है नीतिमार्ग लालन मति कुरीति मारग फैलाओ २
सुनि मात वचन यों कहन लगे ये जननी बात कभीनाओं ॥
उस पिता हमारे ने माता ये शत्रु भाव क्यों कीना ओ ३
हम कभी प्रणाम न करने के ना जाय दीनता दिखलावें ॥
हमतो हैं मात तुम्हारे सुत इसलिये लड़ैं ना गम खावें ४
जाकर संग्राम मचावेंगे वहाँ मारें या मर जावेंगे ॥
योधा होकर हम कभी नहीं कायरता को दिखलावेंगे ५
ऐसे सुनि उनके बचनों को मातने मौन गहलीया है ॥
उरमें भारी चिन्ता व्यापी ना ज्वाब कछू भी दीया है ६
फिर दोनों वहांसे आकरके प्राशुक जल मंगवा न्हाते हैं ॥
उत्तम उत्तम ले अष्ट द्रव्य जिनवर का पूज रचाते हैं ७
करि भाव भक्ति से पूजन फिरि मंगल पाठोंको गाते हैं ॥
सिद्धों को नमस्कार करके आ जा त्यारी कर वाते हैं ८

दोहा

माता को धीरज बंधा चर्णों में शिर नाय ।
कूंच कराया कटक का रहा वीर रस छाय १
आये जो जो महीपति सब ही लीये संग ।
अपना ले लस्कर चले चढ़ा जंग का रंग २

चौपाई

मेरी अच्छी मेरी अच्छी दीषै यों भूप सिहाते थे।
इस कारण अपनी सेना में हल्ला मचवाते जाते थे १
दोनों भाई हाथिन पर चढ़ सब ही का मान बढ़ाते थे
मारू बाजा बाजता जाय सुनि सुनि के भट हर्षाते थे २
रस्ते में चलते हुए ना नुकसान किसी का करते हैं॥
सुनि सुनि यश आगे के राजा ला भेंट अगाड़ी धरते हैं ३
हाथी खच्चर अरू ऊंटों पर लद रहा खजाना भारी है॥
बड़े बड़े वीर जिसके संग में करते चलते रखवारी है ४
चलती पैदल पलटन आगे पीछे से चलै रिसाला है॥
हाथिन पर बैठ चले योधा करमें लेकर के भाला है ५
नाना प्रकार रथ सजे हुए मग में झंकार मचाते हैं॥
जुति रहे तुरंग तेज जिन में मानिन्द पवन के जाते हैं ६
नालिकी पालकी मारग में चलती चक चौंधा मारें हैं॥
मानो नभ से दामिनी आन कर दल के बीच झमारें हैं ७
योजन योजन पर करि पड़ाव दल आगे बढ़ता जाता है॥
उड़ि धूलि जाय आकाश छाय ना भानु दिखाई आता है८
आगे आगे मन्त्री चलते सब बन्दोबस्त कर वाते हैं॥
इस लिए सुभट मंजल करते ना खेद जरा भी पाते हैं९
लव कुश की महिमा का वर्णान मुझ अल्प बुद्धि से बाहिर है॥

प्रेमीजन खोलि पुराण लेउ हो जाय आपको जाहिर है १०
इस तरह कटकले साथ वीर चल अवधपुरी ढ़िग आतेहैं ॥
ताकी शोभा को देखि देखि मनमें आश्चार्य बढ़ाते हैं ११
संध्याके बादल के समान ये पुरी दिखाती किनकी है ॥
बतलाओ मामा तलाश कर ये नगरी क्या देवनकी है १२

दोहा

निश्चय करकें भूप ने आय जनाई बात।
यही अयोध्या नगरहै जिसपर चढ़कर जात १
पिता तुम्हारे इसी में बसते हैं बलदेव।
लखन शत्रुहन बन्धु दोउ करें चर्णा की सेव २

चौपाई

सारा ही व्योरे वार हाल मामा ने जाय सुनाया है ॥
इस तरह कथा करते करते दल सरयू तट पर आया है १
उस नदी किनारे के बन में दलका मुकाम लगवाया है ॥
खाना पीना सस्तर बख्तर बटवा कर लहस कराया है २
दलके आने का समाचार उत राम लखन सुन पाया है ॥
नृप कोई युद्ध हेत हम पर सैना लेकर चढ़ आया है ३
ले भूप विराधित को बुलाय लक्ष्मण ने हुकम सुनाया ॥
सैना जल्दी तैयार करो कोइ हम से लड़ने आया है ४
दे दे के पत्र शीघ्र गामी दूतों को अब ही भिजवाओ ॥

हनुमान आदि सुग्रीव भूप खगपति राजों को बुलवाओ ७
आग्या सुनलई विराधित ने चौतर्फा दूत पठाये हैं ॥
सुनि सुनि के भूप तैयार होय सेना ले ले कर आये हैं ८
भामण्डल सीता का भाई खगपती वहाँ पर आया है ॥
यह समाचार सुनि नारद ने उससे जा हाल बताया है ९
ये सीता के दोनों सुत हैं जो युद्ध करन को आये हैं ॥
पुर पुंडरीक में सिया रहै ऐसे कहि बच्चन सुनाये हैं १०
सीता के समाचार सुनके भामण्डल बहौत दुखाया है ॥
लेकिन पुत्रों के आने को सुन अरके अति हर्षाया है १०
मन के समान चलने वाला बिमान जल्दी मंगवाया है ॥
जिसमें चढ़कर के भामण्डल पुर पुंडरीक में आया है ११
जा मिला बहन से महलों में सीता ने रुदन मचाया है ॥
सारा अहवाल अगाड़ी का कह व्योरे वार सुनाया है १२

दोहा

तब भामण्डल बहन को धीरज रहा बंधाय ।
तेरे पुण्य प्रताप से हो सब जग सहाय १
कुमर कटकले चढ़गये भला न कीया काम ॥
नारायण बलभद्र से अवसि होय संग्राम २
युद्ध उन्हों में होय ना ऐसा करो उपाय ।
बहन इसलिये तुमचलो सभी कामबन जाय ३

चौपाई

भाई के बचनो को सुनकर ना पल की देर लगाती है ॥
पुत्रों की वधुओं को लेकर भामण्डल के संग आती है १
इत राम लखन सेना सजाय नगरी से बाहिर आते हैं ॥
नरपति खगपति जिनके संगमें चलि रहे वीर मदमाते हैं २
कृतान्त वक्र सेना पति भट जो आगे आगे जाता है ॥
चतुरंग संग सेना जाके रण का बाजा बजवाता है ३
थे पाँच हजार महीप संग भट बड़े बड़े शस्तर धारी ॥
स्वामी की भक्ति में तत्पर आये थे करिकै तैयारी ४
लघु भ्रात शत्रुहन सजा हुआ माते हाथी सम जाता है ॥
हनुमान बली विद्याधारी के बल का पता न पाता है ५
सुग्रीव अतुल बलधारी को ना किसी तरह की पर्वा है ॥
चलता है वीर निडर होकर मानों आकासी धर्वा है ६
शस्त्रों को वार वार निरखें भट हल्ला करिके धाये हैं ॥
धरती कम्पाते हुए चले नगरी से बाहिर आये हैं ७
कोई हाथिन पर चढ़े हुए कोई तुरंग दौड़ाते हैं ॥
कोई रथ में आरूढ़ भये कोई भट पैदल जाते हैं ८
इस तरह रामका दल सारा सजि समर भूमिमें आया है ॥
थे पहले से तैयार वीर लव कुश ने हुकम सुनाया है ९
ग्यारै हजार राजा संग में सबही का लस्कर आया है ॥

जहां रामचन्द्रकी फौज खड़ी आकर मोरचा जमाया है

दोहा

अब आगे संग्राम का तुम्हें सुनाऊं हाल।
अपनी अपनी तर्फ के खड़े हुए भूपाल १

(चौबोला हाथरस की तर्ज में)

खड़े हुऐ भूपाल पहर लीना वीरोंका बाना, हुऐ भयंकर शब्द देव असुरोंने अचरज माना, सागर के समान गाजै दल मार हि मार मचाते, सन्मुख देखि देखि वीरोंको ऐसे बचन सुनाते * तोड़ * अरे क्या देखै भाई, करै क्यों नहीं लड़ाई, प्रथम देखूं तेरा छल है, फिर में छोड़ूं शस्त्र देख लेना तू मेरा बल है १

दोहा

कोई यों कहने लगा जरा अगाड़ी आउ।
चोट मेरीसे बचनका करना वीर उपाउ २

चौबोला

करना वीर उपाउ वार खाली ना जावै मेरा, छिनक पलकमें होय देखि तेरा यम के नगर बसेरा, कोई निपट नजीक भये तो ऐसे वचन सुनाते, अबन बाण का कांम शस्त्र दूजा क्यों नहीं उठाते * तोड़ * देखि कायर को कोई, म्यान करि लई शिरोही, जायकर यों समझावै,

तोयन मारूं वीर अरे क्यों कॉपि रहा घबड़ावै २

दोहा

हट आगे से अलग जा समर करनदे मोय ।
तेरे पीछे खड़ा है भट दिखलाता सोय ३

चौबोला

भट दिखलाता सोय जाय कर उससे युद्ध मचाऊं, है वह कैसा वीर देखलूं रण की खाज मिटाऊं, कोई गरजे सुभट आय तिसको दूजा धमकावै, क्षुद्र वृथा रहा गर्ज होय सन्मुख ना लड़ने आवै *तोड़* खड़ा सेखो दिखलावै, क्यों नहीं शस्त्र चलावै, तेरी रण भूख भगाऊं, आजा तनक अगार अभी यमके दर्शन करवाऊं ३

दोहा

दोनों लग से परस्पर करते बचन जुझार ।
तेगा बरछी सेल ले करें अनेकन मार ४

चौबोला

करें अनेकन मार सुभट ना धरते पैर पिछाड़ी, इसी बीच में चरचा दूजी पाठक सुनों अगाड़ी, भामण्डल सीता का भाई विद्याधर नृप भारी, पवन बेग विद्युत विद्याधर आये करि तैयारी *तोड़* वीर मिरगांक बली है, पवन का पुत्र छली है, बालि का भाई आया,

सुनि लव कुश की कथा युद्ध करना न इन्होंने चाहया ४

दोहा

तिसी समय सीता सती ले बहुओं को संग।
दाखिल आकर होगई जहाँ मचि रही जंग ५

चौबोला

जहां मचि रही जंग यान ला नभ में ठैराया है, लखि विद्याधर भूपों ने कर जोड़ि शीश नाया है, देखि सुतों का समर सती दिल में दहला खाया है, थर थर थर्रा रही नहीं कछु अवसर बनि आया है * तोड़ * बली लव कुश दोऊ बाँके मचावें रण में साखे, राम से लव लड़ता है, उत लक्ष्मण के सन्मुख जा कुशवीर बली अड़ता है ५

दोहा

आते ही लव वीर ने किया महा संग्राम।
धनुष्य तोड़ दिया राम का छेदी धुजा महान ६

चौबोला

छेदी धुजा महान तोड़ रथ रामचन्द्र का दीया। यह कौतुक लखि हंसे राम धनु हाथ दूसरा लीया। दूजे रथ पर चढे क्रोध की ज्वाला उठी बदन में। भृकुटी लई चढ़ाय मनों ज्यों सूरज तपै गगन में। *तोड़*दशाये लवनें देखी, नहीं दिखलाई सेखी, अगाड़ो बढ़ कर आया,

रामचन्द्र की पाहुन गति करने को धनुष उठाया ६

दोहा

राम लवण की परस्पर होंय अनेकन मार।
तैसेहि लक्ष्मण सुभट संग कुश लड़ रहा कुमार ७

चौबोला

कुश लड़ रहा कुमार वीर हैं दोनों तरफ जुझारे । प्राण जाय तो जाऊ नहीं कोई रण से हटन वारे । देखि इन्हों का युद्ध सुभट सेना हू के हर्षाने । अपनी अपनी पक्ष लगे लड़ने अड़के मरदाने *तोड़* बाज से बाज लड़ाई, गजन से गजन मचाई, लड़ें पैदल आपुसमें, मानत नाहीं हारि धनी को पक्ष्य धुसी नस नस में ७

दोहा

प्रति पक्षी का सामने टूटा बखतर जान।
मौंन साधि ठाड़े रहें गहें न तिस पर बान ८

चौबोला

गहें न तिस पर बान दया कर जाय सहारा देते, कोई अड़ अड़ लड़ें नाम अपने मालिक का लेते । कोई भट बलवान जाय हाथिन सों युद्ध मचावें। पकड़ें तिनके दांत समर के अन्दर नाच नचावें *तोड़* कामहय जिस का आया, छोड़ि पैदल ही धाया, समर संग्राम मचावै, टूटै

जाका बान हाथ खाली हो मुष्टि चलावै ८

दोहा

कोई भटगहि बान को चूकि चलाना जाय।
प्रतिपक्षी सामन्त आ कहता फैरि चलाय ९

चौबोला

कहता फैरि चलाय नहीं लज्जा का काम समर में, साव धान हो लड़ो बान दूजा उठायकर करमें। शस्त्र रहित को देखि वीर निज शस्तर पटकें करसे। मल्ह लड़ाई लड़ें आय दोनों भट इधर उधर से *तोड़* युद्ध इस तरह मचावें, हार ना दिल में लावें, गिरे उठ उठ कर धाते, प्राण जायं तो जांय नहीं रण में फिर पीठ दिखाते ९

दोहा

शस्त्र शस्त्र से खटकते झड़ै अग्नि रण बीच।
रक्त धार बहने लगी हो गई गहरी कीच १०

चौबोला

हो गई गहरी कीच नहीं रथ जलदी चलने पाते, हाथी मर मर गिरे पड़े मारग में रोक लगाते। हुआ भयंकर युद्ध कहाँ तक इसको कथि बतलावे, शिर देकर यश लेयँ नहीं भट पीछे कदम हटावें *तोड़* सुभट दोनों लंग बाके, मचावें रण में साके, वीरताको दिखलावें, ल्हासन

पर रख पैर बली आपस में बल अजमावै १०

दोहा

पड़ा मूर्छित देख कर अरु निर्बल पहिचान।
क्षत्री धर्म बिचार कर गहें न तिसपर बान ११

चौबोला

करें न तिनका घात लाल क्षत्री के वीर कहावें। तज जीने की आस अगाड़ी बढ़ कर समर मचावें। हटै न दोनों सैन न्यूनता अपनी नहीं दिखावें। नमक हलाली होय भक्ति स्वामी को अधिक जनावें *तोड़* अन्न स्वामी का खाया, सो बदला देना चाहया, हटें नहि शीश कटावें, बड़े धुरंधर वीर मार हल्ला संग्राम मचावें ११

वार्ता

इस प्रकार आपस में यह तो सेना के वीरों में आपसी युद्ध हुआ आगे जैसा राम, लक्ष्मण और लव कुश में युद्ध हुआ सो सुनो। लव कुमार का तो सारथी राजा वज्रजंघ और कुश का सारथी राजा पृथु, और लक्ष्मण का सारथी राजा विराधित, और रामका सारथी कृतान्त वक्र सेनापति हुए।

दोहा

धनुष राम कर में गहा बज्रा वर्त विशाल । *
बचन सारथी से कहे दशरथ जी के लाल १२

चौबोला

दशरथजी के लाल बचन बोले रथ बढ़वाने का। चलो क्यों ना ढील देखना है बल मरदाने का। तभी सारथी कहो नाथ नहीं रथ जलदी चलनेका। किये जर्जरे बाज बान धारी न इन्हों सा देखा *तोड़* अश्व ना कदम उठाते, मूर्छित से दिखलाते, तोड़ मेरा बखतर दीना, दी बाणों से छेद भुजा मेरी काम की रहीना १२

दोहा

सुने सारथी के बचन बोले राम सुजान ।
धनुष मेरा भी गति रहित हूआ सांची जान १३

चौबोला

हूआ साँची जान पड़े थोथे ये हल मूसल है। समर भूमि के बीच कहो अब कैसे होय कुशल है। थे अमोघ ये शस्त्र शत्रु के मध को मथने वाले। एक एक की सहस सहस रहें देव सदा रखवाले ॥तोड़॥ भरोसा इनका भारी, हुए सब ही बेकारी, सिथिलता दिखलाते हैं, होय

---

* ये वही धनुष था जो धनुष यज्ञ में रामचन्द्र ने चढ़ाया था

निरर्थक गये शत्रु के ऊपर नाजाते हैं १३

दोहा

इत लव ऊपर राम के हूए निरर्थक बान।
उधर कुमर कुश संगमें लखन हुए हैरान १४

चौबोला

लखन हुए हैरान शस्त्र सातों ही काम न आये। देवों के दीये आयुध सो बार बार अजमाये। लव अंकुश तो पिता चचा की जानें हालत सारी। मारें अंग बचाय शस्त्र ना होने देयँ दुखारी *तोड़* सुतन को ये ना जाने, लड़ाई करीं ठानें, जोर करि करि शर मारें, लव अंकुश दोऊ वीर खंडकरि तिनको महिमें डारें १४

दोहा

देवों से आयुध मिले सो नहिं आये काम।
फिरि सामान्यउठाय शर करत भये संग्राम १५

चौबोला

करन लगे संग्राम लखन ने शस्त्र अनेक चलाये। सो अंकुश ने बज्र दंड से तोड़े धरनि गिराये। रामचन्द्र ने भी जो जो सर लव ऊपर मारे हैं। सो सब छिनक पलक में लब ने चूरण करि डारे हैं *तोड़* सेल कुमरों ने लीए, छोड़ि तिन ऊपर दीए, चतुर ताई से मारे, छोड़ि

मर्म के अंग लगे ऐसी किरिया से डारे १५

दोहा

आते हूए सेल को कर न सके कुछ ओट।
लक्ष्मणके तनमें लगी जा हलकी सी चोट १६

चौबोला

जा हलकी सी चोट लगी ना फेरि सम्हरने पाया। नेन घूमने लगे मूर्छित हुआ धरनि में आया। तभी विराधित ने उठाय करके रथ में लेटाया। लौटा कर रथ चला नगर अजुध्या को आना चाहया * तोड़ * होस लक्ष्मण को आया, विराधित को धमकाया, कहा तें करनी कीनो रथ लाया लौटाय वीरता डुबो हमारी दीनो १६

दोहा

रथ को लोटा कर अभी ले चल उस ही ठाम ।
रण में पीठि दिखावना नहीं वीरों का काम १७

चौबोला

नहीं वीरों का काम शत्रु के सन्मुख युद्ध मचाऊं। प्राण जांय तो जाउ नहि क्षत्रापन को लजवाऊं। क्षत्री कुलको पाय समर में मारूं या मरजाऊं। दुश्मन को दिखलाय पीठ ना भगके घरको जाऊं। तोड़। समरसे लौटा लाया, दाग मुझ को लगवाया, भला तैने ना कोना, रघु बंसिन

का बंस भानु सम सो काला कर दीना १७

दोहा

रामचन्द्र का भ्रात लघु दशरथ राजकुमार ।
कहवा करके समर से भगना है धिःकार १८

चौबोला

बार बार धिःकार मान रथ बढ़ा समर को दीया । था जहां अंकुश कुमर जाय फिर युद्ध भयंकर कीया। व्यर्थ भये सब शस्त्र हाथ फिर चक्र सुदर्शन लीया । सहधार महा ज्वाल रूप सम छोडि कुमर पर दीया ॥ तोड़ ॥ जोर का चक्र चलाया, कुमर के ऊपर आया, चोट ताने ना कीनी, प्रभारहित होगया कुमर की तीन प्रदच्छिण दीनी १८

दोहा

आय चक्र ठंडा हुआ, किया न तिसने घात ।
उलटा जा स्थिर हुआ लक्ष्मण जी के हाथ १९

चौबोला

लक्ष्मण जी के हाथ विराजा चक्र सुदर्शन आके । फिर भी तिसे घुमाय कुमरके ऊपर दिया झुकाके । इसी तरह पर सात बार आया और चक्र चलाया । आखरि होय निरास लखन ने रण से भाव हटाया ॥ तोड ॥ हृदय मे लज्जा आई, सिथिलता तन पर छाई, नहिं अवसर

बनि आया, यह हालत को देखि आय सिद्धारथ ने समझाया १९

(लव अंकुश का राम लक्ष्मण से मिलाप)

दोहा

अब आगे बर्णन करूं लवकुश राम मिलाप।
सीता के सतकी कथा सुनों कटें सब पाप १
लक्ष्मणको लखिके शिथिल सिद्धारथने आय।
कुमरों की सारी कथा दीनी तहाँ सुनाय २

चौपाई

ये पुत्र जानकी के दोनों इस लिये चक्र ना चलता है ॥
इसकी गति यही सदा भाई ना कभी कुटम्बको हनता है १
हालत कुमरों की सुन करके नारायण हर्षित होता है ॥
कर से हथियार डारि दीने सीताकी सुधि कर रोता है २
बलभद्र सुतों की सुनि हालत हथियार हाथ से डारे हैं ॥
मोह में मूर्छित हो करके गिर गये न बचन उचारे हैं ३
चंदन आदिक ला लोगों ने छिड़काव रामपर कीना है ॥
हूए सचेत हो प्रेम मगन करि गमन सुतन ढिग दीना है ४
दूर से पिता आते देखे दोनों रथ तज कर आये हैं ॥
कर जोड़ विनय करि वार वार चर्णों में शीश नवाये हैं ५
श्री रामचन्द्र हर्षित हो कर छाती से कुमर लगाये हैं ॥

करते हूऐ विल्लाप गिरा गद गद कहि बचन सुनाये हैं ६

दोहा

हाय पुत्र मैंने तुम्हें मंद बुद्धि को धारि ।
गर्भ समय सीता सहित बनमें दिये विडारि १

छन्द

हा जानकी निर्दोष को ताड़ी दया आई नहीं ।
लक्ष्मणने शिक्षा दी घनी पर वह मुझे भाई नहीं १
हा पुत्र कोई पुराय कर सूरति तुम्हारी मिल गई ।
नातर बनी में कौनथा जहां जानकी छोड़ी गई २
उस बन-भयंकर विकट में जो बज्रजंघ न आवता ।
तो लाड़िले सूरत तुम्हारी आज कहां मैं पावता ३
तुम समर में जीवित रहै बालको मेरे घात से ।
हूऐ सहाई देव आ कोई पुराय के प्रताप से ४

दोहा

भला हुआ मो सरन से बचे तुम्हारे प्राण ।
थारी जननी की सुनत नातर जाती जांन १

चौपाई

इस तरह खड़े रण भूमी में विल्लाप रामजी करते हैं ॥
फिर कुमर जाय लक्ष्मणजी को करि विनय चर्णामें पड़ते हैं १
सुधि सीता की लक्ष्मण करके नैनों से नीर बहाता है ॥

विव्हल होके स्नेह भरा दोनों को हृदय लगाता है २
बिरातान्त सुना शत्रुहन ने चलि तुरत वहाँ पर आया है॥
करते हुए कुमर विनय दोनों को छाती से चिपटाया है ३
इस तरह परस्पर प्रेम देखि भट सेना के हर्षाते हैं॥
दोनों तरफों के मिल करके आपस में प्रेम बढ़ाते हैं ४
पुत्रों की कीरति नभ में से लखि लखि माता हर्षाती है॥
उलटा विमान लौटा करके पुर पुंडरीक को जाती है ५
भामंडल तभी भानजों से नीचे आकर के मिलता है॥
स्नेह भरा आंसूडारै ना दिल के अन्दर थिरता है ६
हनुमान वहां पर आकरके कह भली भली बतलाता है॥
स्नेह जना कर वार वार कुमरों को कंठ लगाता है ७
सुग्रीव विभीषण जामवन्त सारे आ आके मिलते हैं॥
खगपति नरपति राजा सारे आ आके वहां सिकलते हैं ८
देवों ने नभ में आकरके जय जय का शब्द उचारा है॥
विद्याधर विद्याधरियों ने आ रोपा नृत्य अखाड़ा है ९
बलभद्र और लक्ष्मण दोनों फूले ना अंग समाते है॥
नृप बज्रजंघ का आदर कर ऐसे कहि वचन सुनाते हैं १०

दोहा

जो करनी तुमने करी कहने को नहीं ठौर॥
भामंडल समभूपती तुम मेरे शिर मौर १

राम लखन ले सुतन को चले नगर की ओर।
देश देश के भूपती पहूंचे अपनी ठौर २

चौपाई

प्रथम नगरी से वाहिर ही जिन मन्दिर जी में आये हैं ॥
अर्हंत प्रभू के दर्शन दोनों कुमरों को करवाये हैं १
नगरी तो खुद पहले ही से स्वर्ग के समान दिखाती है ॥
फिर भी कुमरों के आने से अति ही शोभाको पाती है २
जिनवरजी के दर्शन कराय फिर गमन भवनको कोना है ॥
लव कुश के देखन के काजैं लोगों में धीर रही ना है ३
मारग में भारी भीड़ हुई ना रस्ता मिलै निकलने को ॥
वह उसे हटा वह उसे हटा फिरते कुमरों से मिलने को ४
घर के धन्धे बिगड़ो सुधरो ना ध्यान किसी ने दीना है ॥
फिरते हैं गली बजारों में कौतूहल भारी कीना है ५
छत्तों पर कामिन खड़ी हुई कठ पुतलीसी दिखलाती हैं ॥
आपस में झगड़ा कर करके भारी हो दुन्द मचाती हैं ६
किस ही के कुन्डल टूटगिरै हारकी लड़ी न सम्हारी है ॥
किस ही की साड़ी उतर गई नंगे ही शिर से ठाड़ी है ७
कोई कोई से कहती है क्यों ऊंचा शिर कर राखा है ॥
हमको भी वहन देखने दे भारी लग रही अभिलाखा है ८
कोई आगे की से कहती क्यों घेरि अगाड़ी ठाड़ी है ॥

क्या तैंने देखन की यहाँ पर ले लीनी ठेकेदारी हैं ९
तू तो पहले से देख रही मैं तो अबही ही आई हूं ॥
इनकी महिमा सुनि भाग पड़ी सुतको सूना छोड़याई हूं १०

दोहा

कोई कोई से कहै बार बार फटकारि ।
बिखरि केश शिर के रहै ऐरी इन्हें सम्हारि १
कोई होय अचेत सी खड़ी झरोखा माहिं ।
कोई इत उत को भगै थिरता दिल में नाहिं २
कोई हाथ उठाय कर देने लगी अवाज ।
आज अगाड़ी यहाँ से जायँ नहीं महाराज ३

चौपाई

कोई को जगै नहीं मिलती इत उत को भागी फिरती है ॥
कोई मतवाली सी बन कर उठ उठ कर गिर गिर पड़ती है ४
कोई नारी आरता करैं कहिं पर मिलि मंगल गावें हैं ॥
कोई नारी पीले चावल ले पुष्पाँजलि वर्षावें हैं ५
कोई तियायों पूछन लगी कौनसा लवण कुनसा कुश है ॥
ऐतो दोनों एक से लगें दोनों का एक रूप रस है ६
तिसको कोई समझाय रही ये हरे बस्त्र वाला कुश है ॥
जो लाल वस्त्र पहरे हूए वह लवण करै मन को बस है ७
है धन्य धन्य सीता रानी पुराय का उदय था बहना री ॥

इन पुत्रों को जनकर तिसने यश दीया जगत में फैलारी ८
है भाग्यवान बोही कामिनि जिनके जैं हुए भर्तारी ॥
इनके सरूप को देखि देखि आ मदन बदन को दर्तारी ९
इस तरह अयोध्या की नारी आपस में बाते करती हैं ॥
गई दूरि सवारी निकल फेर भी वहांसे खड़ी निरखती है १०
चलते चलते श्रीरामचन्द्र ले सुतन महल में आये हैं ॥
तिस अवसर युवतिनने मिलकर महामंगल शब्द सुनाये हैं ११
तिस समये की उपमा कहना मो अल्प बुद्धि से भारी है ॥
इसलिये यहाँ कुछ थोड़ीसी आगम नुसार विस्तारी १२

दोहा

वैभव चाहे धर्म गहि ऐरे भोरें जीव ।
नातर भव बन बिकटमें भटका फिरै सदैव १

(सीता जी की अग्नि परिक्षा)

दोहा

पंच परम पद प्रणमि के बंदो केवल बानि ।
बंदो तत्वारथ महा जैन धर्म गुण खानि १
महिमा शील महंत की कहें महागणधार ।
भाषै श्री जिन भारती रटें साधु भवतार २

चौपाई

सुग्रीव विभीषण हनुमान मिलि रामचन्द्र पर आये हैं ॥

कर जोड़ि विनय करि बार बार ऐसे कहि बचन सुनाये हैं १
है कृपा नाथ किरपा करके सुन लीजे विनय हमारी है ॥
पुर पुंडरीक में बास करै श्री सीता सती विचारी है २
आज्ञा दो उसको ले आवें पुर पुंडरीक में जा करके ॥
माता को बिनती बार बार कर लावें यहाँ लिवा करके ३
ये सुन के रामचन्द्र बोले तुम कहौ बात सो अच्छी है ॥
मैं भी जानूं निश्चय भाई निर्दोष जानकी सच्ची है ४
लोका अपवाद जान करके मैंने वो घर से काढ़ी है ॥
अव कैसे उसे बुलाऊं मैं इसमें भी लज्जा गाढ़ी है ॥
लोगों को अपना सत दिखाय आवै जो जनक दुलारी है॥
तो मेरे घरमें बास करै अन्यथा बात ए भारी है ६
इसलिये महीपत देशों के देदे के पत्र बुला लीजे ॥
सब के सामने परिक्षा कर सीता को शुद्ध बना दीजे ७
ये सुन के सबही कहन लगे जो नाथ आपकी मर्जी है ॥
हो जावे उसी तरह स्वामी ये सत्य समझ लो अर्जी है ८
इस तरह सबों ने मता उपा भूपों पर दूत पठाये हैं ॥
सीता के सतकी बात सुनी परिवार सहित नृप आये हैं ९
विद्याधर चढ़ि चढ़ि बिमान में नभके मारग हो आते हैं ॥
स्त्रीन कै सहित अवध में आ अपना स्थान लगाते हैं१०
राम के हुकम से अधिकारी सब वदोवस्त कर वाते हैं ॥
पुरके बाहिर उपवन में जाकर कपर कोट तन वाते हैं ११

मजबूत खम्भ लगावा करके ऊंचे मंडप बनवाते हैं ॥
लगवाय झरोखा अजब अजब तिनमें जाली लटकाते हैं १२
सीता के सत की सुन करके जो जो नर नारी आये हैं ॥
तिन सबकी खातर कर करके ला राज द्वार ठैहराये हैं १३

दोहा

रामचन्द्र की ओर से इन्तजाम सब ठौर ।
अधिकारी करने लगे जा जाकर हर तौर १
भाजन भोजन वस्त्र अरु तांमूल गंधादि ।
सैया आसन नीर सुध औषधादि इत्यादि २

चौपाई ।

यह वन्दोबस्त है निशिवासर ना जरा कमी होने पावै ॥
अब वोभी हालत बतलाऊं जिस तरह जानकी यहाँ आवै १
हनुमान विराधित भामण्डल राम के हुकम को पाते हैं ॥
सुग्रीव विभीषण जामवन्त सारे हो मिल कर जाते हैं २
बैठे विमान में सब योधा पुर पुंडरीक में आते हैं ॥
सीता देवी के दर्शन करि जय जय के शब्द सुनाते हैं ३
पीले अक्षत आगे चढ़ाय चर्णों में शीश नवाते हैं ॥
गये बैठि मात के आंगन में आये सो हाल बताते हैं ४
श्रीराम बुलावैं है माता चलि करो अवध में वासा है ॥
रपुजन परिजन परजा वासी सबहीको ये अभिलाषा है ५

बिन शशि के रैनि अंधेरीमें आकाश न शोभा पाता है ॥
ऐसेही माता अवध नगर फीकातुम विना दिखाता है ६
हो पतिव्रते पंडिता तुम्हीं सब आगम की जानन हारी ॥
इसलिये अवश्य चलिये माता स्वामी के बचन माननारी ७
सुनके इस तरह बात सबको चलने की त्यारी कीनी हैं ॥
बैठी बिमान में बहुओं को लेकर वहां से चल दीनी हैं ८
आई अजुध्या के निकट छिपा सूरज होगया अँधेरा है ॥
इस कारण नगरी से बाहिर रात्री भर किया बसेरा है ९
होते ही भोर चली वहाँ से स्वामी के दर्शन पाने को ॥
हथिनी पर बैठ सहेलिन संग कर दीया गमन ठिकानेको १०

दोहा

पुरके नरनारी सबै बाल बृद्ध तहां आय ।
सीता के दर्शन करें जय जय शब्द सुनाय १
धन्य धन्य ये शील बृत धन्य मात तेरा धीर ।
धन्य धन्य यह रूप है धन्य मात गम्भीर २

चौपाई

इस तरह बचन नर नारीन के कहते तहाँ पड़ें सुनाई है ॥
है भाग्य हमारा धन्य धन्य जानकी लौट कर आई है १
तारागण बीच चन्द्रमा ज्यों सखियन विच सीता आतीहै ॥
कुछ अरसा नहीं लगन पाया आ द्वार सभाके जातीहै २

हथिनीसे उतर सहेलिन संग चलि बीच सभाके आईहै ॥
सब सभा जनोंने बिनतीकी जयजय धुनि चहुँ दिशछाईहै ३
बिद्याधर विद्या धरनी मिलि कौतूहल नभ में करते हैं ॥
तिनके बरषाये भए पुष्प सीता के ऊपर पड़ते हैं ४
लक्ष्मणने उठ कर अर्घ दिया चरणोंमें शीश नवाया है ॥
भूपों ने विनय बंदना करि यश वार वार ही गाया है ५
आवती जानकी निकट देखि रामका हूआ मन मैला है ॥
मैंने तो इसको त्यागि दई फिर भी आ कोना भैला है ६
है महाधीठ डरपै न तनक मोसे अनुराग बढ़ाती है ॥
इन भरो सभा के लोगों में आकर झूंठा पड़वाती है ७
यह देखि चेष्टा स्वामी को सीता उदास हो जाती है ॥
मानिन्द काठ की पुतली के हो गई न कदम बढ़ाती है ८
होकर उदाश सोचती खड़ी ना अन्त कर्मका आया है ॥
फटिजा धरती जाऊं समाय हो जावै सभी सफाया है ९
पैर के अंगूठे से धरती चिन्ता तुर होय कुचरती है ॥
यह देखि राम बोले सीते यहाँ खड़ी सोच क्या करतीहै १०
मेरे आगे से दूर होउ ना तेरी सूरत भाती है ॥
ग्रीषम ऋतु के सूरज समान आ करके मुझे तपाती है ११
रही बहुत दिवस दसमुखके घर ये वात जगतमें जाहिर है ॥
इसलिये तुझे घर में रखना मेरी इच्छा से बाहिर है १२

दोहा

यह सुन बोली जानकी नाथ निर्दई होय।
पंडित हो कर मूढ़ ज्यों घर ते काढ़ी मोय १

छन्द

जिन दर्श की अभिलाष थी गर्भा अवस्थामें पिया।
बदले बंदना के मुझे घर से निकाला दे दिया १
मेरा पठाना आपको क्या उचित था उस बिपतिमें।
होता मेरा कुमरण वहां जाती अवश्यमें कुगतिमें २
होती प्रसंशा आपकी बतलाय दीजै क्या पिया।
थी यही मरजी आपकी तो छोड़ते लखकर ठिया ३
थी अर्जिका जिन धर्मिणी उनमें मुझे भिजवावते।
तो नाथ इस संसार में यहाँ वहां बड़ाई पावते ४

दोहा

अपनी करनी में तुमन कसरि न राखी कोय।
अब प्रसन्न हो वो प्रभू आज्ञा करो सु होय १

छन्द

इतनी सुनाकर जानकी विलाप करि करि रो रही।
तब राम बोले देखि मैं जानू सभी जो तै कही १
है शील वृत निर्दोष तू बारह वृतों को पालती ।*

* बारह वृतों का वर्णन जैन शास्त्रों में देखना।

धर्माचरण विख्यात ना मेरे बचन को टालती २
हे सती तेरी भावना थी शुद्ध सो सब जानता ॥
लेकिन जगत की बात सुनि हूई मुझे अज्ञानता ३
अब यतन सोई कीजिये जिमसे मिटै अपवाद है ॥
इन कुटिल पुरुषों के हृदय से दूरि होय विषाद है ४

दोहा

तब सीता कहने लगी सुनों नाथ धरि ध्यान ।
जो कुछ मन्सा आपकी वही मुझे परवान १

छन्द

जिस तरह जग का दूर हो सन्देह सोई कीजिये ।
पीऊं हलाहल बिष अभी ला नाथ मो को दीजिये १
ऊंची से ऊंची अग्नि ज्वाला अभी जलवा दीजिये ।
उसमें करूं परवेस जब तो मान सांची लीजिये २
इससे इलावा यतन कोई होय आप बताइये ।
दाशी खड़ी मौजूद लो हर तरह से अजमाइये ३
सुनि राम यों कहने लगे मैं कहूं सोई कीजिये ।
जलती अग्नि के कुराड़में धस कर परीक्षा दीजिये ४

दोहा

अति हर्षित हो सिया ने कही मुझे मंजूर ।
अग्नि कुराड जलदी प्रभो रचवादो भरपूर १

माताकी सुनि प्रतिज्ञा लव अंकुश दोउ वीर ।
तड़फड़ाय व्याकुल भये बंधे न कुछ तदवीर २
भास्मंडल हनुमानका दिल गया दहला खाय ।
सिद्धारथ क्षुल्लक तभी बोला हाथ उठाय ३

चौपाई

हे राम सिया की महिमा को है कौन जगत में बतलावै ।।
इन्द्रादिक देव कथित हारे ना पार देव गणधर पावै १
सुम्मेर धसकि पाताल जाय क्षीरों दधिका जल उड़जावै ।।
चन्द्रमा होय अग्नी समान सूरज में शीतलता आवै २
ये बातें सारी हो जावें ना माता में दूषण लागै ।।
मैं पंचमेरु तक हो आया यश सुनत गया आगे आगे ३
है पद्मनाभ सीताका यश मुनिगण मिलि निश दिन गाते हैं।।
है ठौर ठौर भारी महिमा फिर क्यों ऐसा कर वाते हैं ४
विद्याधर भी तिस समय आय नभ में से शोर मचाते हैं ।।
ना अग्नी कुण्ड रचा जावै यों कह करके चिल्लाते हैं ५
नरनारी सब ही घबड़ये हा देव कहा यह ठैगाई ।।
हो वौ प्रसन्न समता धारो है अर्ज हमारी रघुराई ६
इस तरह लोग बिनती करते सीता के यश को गाते हैं ।।
आंखों से आँसू की बूंदें मोटी मोटी टपकाते हैं ७
॥ तब राम कही सुनलो लोगो हो ऐसे दयावान भाई ।।

तो प्रथम दोप लगाने की क्यों चरचा जग में फैलाई ८
इस तरह जवाब रहित करके लोगों को मौन बनाये हैं ॥
खड्डा खोदन के काज बुला किंकर यों वचन सुनाये हैं ९
तीन सै हाथ लम्बा चौड़ा चौखूंटा कूप तैयार करो ॥
सूके चंदन कृष्णा गरू के लकड़े लाला कर तिसे भरो १०

दोहा

अग्नी तिस में डाल कर दीजै ताहि जलाय ।
जाकी लौ आकाश में परलै सी दिखलाय १
सुनि आज्ञा किंकर तभी खाडा खोदा जाय ।
रामचन्द्र के कहे वत दीनो अग्नि जलाय २
अब भाई यहां से अलग दूजा चलै प्रसंग ।
तिसके कारण सिया के होय दुखोंका भंग ३

चौपाई

इस भरत क्षेत्र के उत्तर में बिजायारध पर्वत भारी है ॥
तिस पर विद्याधर भूप वसैं एकते एक बल धारी है १
तिनमें इक बिक्रम सिंह भूप रानी श्री ता को प्यारी है ॥
तिनके सुत हुआ सकलभूषण पैदा आकर अवतारी है २
आठसै कुमरि तिसने ब्याही थी किरण मंडला पटरानी॥
तिसके ऊपर करि कोप लिया वैराग छोड़िदई रजधानी ३
तजि वस्त्र सकल भूषण कुमार बनिगये दिगम्बर मुनिज्ञानी॥

फिर रानी मरि राक्षसी हुई सब बातें पिछली पहिचानी ४
सो पूरब बैर बिचारि आय मुनिवर को करै परेशानी ॥
नहीं होने देय अहार उपद्रव करै अनेकन महारानी ५
देती कहीं आग लगाय जाय कहीं रुधिर धार बर्षावै है ॥
कहिं बनें बैल बनि जाय अश्व हाथी बनि द्वन्द मचावै है६
कहीं मारग में कांटे बखेर करि कीच कहीं दिखलावै है ॥
कहिं चौर चौर दुष्टिनी करै दुष्टों के कर पकड़ावै है ७
कोई भलै पुरुष छुड़वाय देयँ तो भी फिर द्वन्द मचावै है॥
इस भाँति क्रूर चित दया रहित सब पूरब बैर चुकावै है८

दोहा

एक समय बनके बिषैं खड़े मुनीधरि ध्यान ।
रात्रि समय तहाँ जाय कर रही उपद्रव ठान २
सिंघ व्याघ्र ल्यारी सरप बना बना दिखलाय ।
राक्षस भूत पिशाच अति दिखला रही डराय २

चौपाई

घन ज्यों घन घोर करै नभ में कंकर पानी बर्षाती है ॥
चपलावत चमक चमक करके मुनिका धीरज छुड़वाती है१
करि करि अंगारोंकी वर्षा फिर शीतल पवन चलाती है ॥
तरुओं को तोड़ तोड़ पटकै धरि रौद्र रूप डरपाती है २
उर्वसी सरीखी बन करके बहु हाव भाव दिखलाती है ॥

रस भरी रागनी गाय गाय मन मथके बान चलाती है ३
इस तरह दुष्टिनी बार बार उपसर्ग कीये अति भारे हैं ॥
फिरभी मुनि थिर आसन करके सुम्मेर शिखर सम ठाड़ेहैं ४
ना पड़ी पेश तब भागि गई ना फेर लोट कर आई है ॥
हुआ केवल ज्ञान प्रगट मुनिको देवन महिमा सुनिपाई है ५
इन्द्रादिक देव कल्पवासी चढ़ि चढ़ि विमान चलि दीने हैं ॥
व्यन्तर ज्योतिषी भवनवासी मुनि गमन सबनने कीने हैं ६
मारग में आते अग्नि कुण्ड देखा देवों ने भारी है ॥
तब मेघकेतु सुरने हालत कह दई इन्द्र से सारी है ७
यहां नाथ सती सीताजी को उपसर्ग होन की त्यारी है ॥
वह महा श्राविका पति बृता शील के पालने वारी है ८

दोहा

ऐसे निर्मल चित्त को कष्ट कहो क्यों होय।
आज्ञा होवै आपकी दूर करूं जा सोय १
तब सुरपति ने देव को आज्ञा दई सुनाय।
मैं जाऊं दर्शन करन तुम यहां करो उपाय १

चौपाई

इस तरह आज्ञा करि सुरेश केवली निकट आजाता है ॥
उत मेघकेतु अपना विमान कुण्ड पै लाय ठैराता है १
बैठा विमान में नभ में से अपनी माया फैलाता है ॥

क्या होय रहा क्या होवैगा ना पता किसी को पाता है २
अबअग्नि कुंडका हाल सुनों लो उठ उठ नभमें जाती है॥
यह देख राम व्याकुल हूए ना दिल में थिरता आती है ३
मन मनमें सोच करन लागे अब सीता को कहां पाऊंगा ॥
हो जावै अवसि भस्म इसमें मैं कैसेकर दिवस बिताऊंगा ४
ना होता जन्म जनकजी के ना बदनामी शिर पर आती ॥
ना बन को ही जाना पड़ता ना जलती हूई दिखलाती ५
बिन सिया कहीं भी क्षण मांतर ना सुक्ख दिखाई होताहै॥
सीताके संग बनवास भला बिन सिया स्वर्ग भी थोताहै६
ये सप्त भयों से रहित सदा तो अब क्या डरने वारी है ॥
सम्यग्दर्शन द्रढ़ करि राखा समझतो अवस्था सारी है ७
अब रोकूं तो रोकूं कैसे पहले कोई को मानी ना ॥
लोगों ने मुझ से बहूत कहा कुछ ऊंचो नीचो जानीना ८
अथवा जिसका जैसा हो तब वो अवसि होयकर रहता है॥
मरना जीना हो उसी तरह वो टाले से ना टरता है ९
इस तरह रामजी बार बार चिन्ता सागर में पड़ते थै ॥
उस बापी की ज्वाला को लखि नरनारी हाहा करते थै१०

दोहा

अग्नि ज्वाल उठि कुंडते नभ में रही समाय ।
धूआं के बादल बने सूरज नहीं दिखाय १

ता समये सीता उठी सिद्धों को शिरनाय ॥
निश्चल चित होकर खड़ी कायोत्स्त्रर्ग लगाय २

छन्द

ऋषभादि तीर्थंकर हृदय में धारि अस्तुति करि रही ॥
परमेष्ठि पांचों नवन करि कोमल वचन सों कह रही १
हो जगत बासी जीव हो मो पर क्षमा सब कीजियों ॥
मैंने क्षमा सब पर करी ये प्रार्थना सुनि लीजियों २
मन वचन काया से कभी जगती हुई वा स्वप्न में ॥
पर पुरुष मन भाया कभी होजाऊं अग्नी भस्म में ३

दोहा

जिन वृत अणुवृत नियम से सदां रहा ही होय ॥
तो अग्नी इस कुंड विच मती जलैयो मोय १
महा मंत्र का जापकरि त्याग राग और द्वैष ॥
अग्नि बापिका में तभी करती भई प्रवेश २

चौपाई

सीता के शील प्रभाव अग्नि होगई लोपना पाती है ॥
अग्नि की वापिका के वदले जलकी-बापिका दिखाती है १
निर्मल जल सहित सरोवर है मणि मय तट मन को हरते हैं ॥
रहै भांति भांतिके फूलि कमल जल जीव बिचरते फिरतेंहैं २
उठते हैं झाग सरोवर में जल उठता हूआ आता है ॥

गम्भीर भवर पडने लागे गर्जता हुआ दिख लाता है ३
प्रत्थम जल घुटनों तक आया फिर कमर बराबर आताहै॥
एक निमष मात्र में छाती तक होगया न रोका खाता है४
जल कंठ तलक गहरा हूआ शिर ऊपर खेला जाता है ॥
तब नर नारी भागने लगे भारी हो रही असाता है ५
बच्चों को उठा उठा भागे सामान हाथना आता है ॥
भय भीत पुकारें नर नारी क्या ठट रचिदीना माता है ६
हे देवि लक्ष्मी सरस्वती कल्याण रूपिणी क्षमा करो ॥
हे धर्म धुरंधर दयावती हम दुखित जनों का दुक्ख हरो ७
हे मात बचाउ बचाउ हमें करुणा करि टेर लगाते हैं ॥
इस जल धारा को रोकि लेउ नातर हम डूबे जाते हैं ८

दोहा

त्राहि त्राहि के शब्द तहां होनलगे चहुं ओर ॥
तब माता की दया से जल पहुँचा निज ठौर १
शब्द भयंकर मिटगया होन लगा आनन्द ॥
पक्षीगण जलके विषें विचरन लगे स्वछंद २

चौपाई

कमलों पर मधुकर गूंजरहे हंसों के जोड़े फिरते हैं ॥
सारस सारसनी केलिकरें चकवी चकवा मिलि तिरते हैं १
सुवरण मय मोती मृगाके जड़रहीं सिढी दिख लाती हैं ॥

जल की तरंग उठ उठ करके आ उन पर टक्कर खाती हैं २
केला अंगूर आम जामुन चौतर्फा को लैहराते हैं ॥
चम्पा गुलाब केवड़ा खिला मुरूआदिक महक उड़ाते हैं ३
एक कमल सहस्त्र दल का ऊंचा सरिता के बीचउगाया है॥
ताके ऊपर सिहान एक देवों ने सुघड़ बनाया है ४
शशि मंडल के समान जिसकी रतनों से बाड़ लगाई है ॥
देवन की देविन लेजाकर सीता तिस पर बैठाई है ५
सिंहासन बैठो सीया की शोभा ऐसी बतलाई है ॥
इन्द्र की शची के तुल्य गुरू गण धरने कथि के गाई है ६
चरणों के आगे पुष्पांजलि आआ देवों ने दीनी है ॥
है धन्य धन्य मैथिली तुझे यों गिरा गगन से कीनी है ७
नाना प्रकार दुन्दुभी बजा गारहे नॉचते फिरते हैं ॥
सुरतरू के पुष्पों की वर्षा नभ में से सुर मिलि करते हैं ८
खगचर खग चरनी नृत्य करें जयजय के शब्द सुनाते हैं॥
बिद्या के बल से नाटक में धरि रूप अनेक दिखाते हैं ९

दोहा

तिस समये लव कुश कुमर माता से हित लाय ।
जल तर करिके निकट हो दोनों पहुँचे जाय १
नमस्कार करि मात को ठाड़े दोनों भ्रात ।
तब माता ने प्यार कर पूछी सब कुशलात २

(सीता जी को दीक्षा लेना)

दोहा

बंदो चौ आराधना बंदो उपशम भाव।
जाकर क्षायक भाव है होय जीव जिन राव १
सीता के वैराग्य का आगे करूं बयान ।
आतुर चिन्ता छोड़ कर तिस पर दीजे ध्यान २

चौपाई

शील के प्रभाव सियाजी पर ना कष्ट जराभी आया है ॥
अग्नी का कुण्ड सरोवर कर देवों ने बना दिखाया है १
सिंहासन पर बैठी सीता ना छवि वर्णन में आवै है ॥
शरदकी रातिका चंदर्मा देखि के ताहि शर्मावे है २
वहां आकर राचन्द्रजी ने मुखसे यों बचन सुनाया है ॥
हे देवि बिना अपराधर तुम्हें मैंने बहु कष्ट दिखाया है ३
अब वार वार ये विनय करूं अपराध क्षमा कर मेरा है ॥
महलों में चलकर रहो प्रिया ना गुण भूलूँगा तेरा है ४
जो आज्ञा करो हमेसा ही शिर धरके ताहि बजाऊंगा ॥
हे देवी कभी भूल करके ना कहै बचन लौटाऊंगा ५
यों सुनकर वचन रामजी के सीताजी ने समझाये हैं ॥
जग के धन्धों में पड़ करके जग जीवों ने दुःख पाये हैं ६

दोहा

नाथ आप या और का इसमें क्या था दोष ॥
आकर मेरे कर्मने कीना मुझ पर रोस १

चौपाई

मेरे ही कीये कर्मों ने आकर के दुक्ख दिखाया है ॥
में क्रोध करूं किस पर स्वामी जो कीया सोही पाया है १
आप भी विषाद करो न प्रभू वलदेव तुम्हारी किरपा से ॥
स्वर्ग के समान भोग भोगे जो जैसे मेरे मन भाषे २
अब नाथ यही इक्षा मेरी इस तन पाये का सार यही ॥
स्त्री पर्याय किसी बिधि से जा छूटि बात सोभ्यास रही ३
स्त्री का जन्म महा खोटा ना कबहूं सुखसे सोती है ॥
तीनों पनमें आधीन रहै मेरा मेरा कर खोती है ४
कोई को बांझ पने का दुःख कहि होतेही मरजाते हैं ॥
कहि विधवा बाल होय जाती कहिं रहे गर्भ गिर जाते हैं ५
कोई का पुत्र जवान मेरे सो डाह हमेसा रहता है ॥
कोई का सुत खोटे मारग चल उलटी सूधी कहता है ६
कोई रोगों से पीड़ित हैं किस ही के घर में टोटा है ।
किसही का पती सरोगरहै किसही का भर्ता खोटा है ७
कोई निज रूप देखि झुरती कोई तिय कुटुम्ब दुंखारी है॥
कोई असहाय होय कर के घर घर बनिफिरै भिखारी है ८

ये भोग जिन्हें अच्छा समझें सो रोग बढ़ावन हारे हैं ॥
दुश्मन समान जगजीवों को भव कूप गिरावन वारे हैं ९
भोगती समें लागें नीके हों अन्त समय पर फीके हैं ॥
विषधर अग्नी से भी जादा होते दुख दाई जी के हैं १०
हैं धर्म रतन के चौर चपल दुर्गति के पन्थ सहाई हैं ॥
जोड़े जांठे को लूट लेयँ आगे दे राह बताई हैं ११
इस लिये लाख चौरासी से मैं आवा गमन निवारूंगी ॥
तज कर संसारी झगड़ों को जिनवर की दीक्षा धारूंगी १२

दोहा

इतनी कह कर सिया ने भाव धरै वैराग ।
कैस लोंच करने लगी तन धनसे तजि राग १
ज्यों जमींन से घास त्यों डारे केस उपारि ।
रामचन्द्र के सामने दीने सारि डारि २

चौपाई

ये देख राम को शोक हुआ गिर गये मूर्छा खा करके ॥
जब तक ना चेत हुआ उनको सीता ली दिक्षा जा करके १
जा प्रथ्वीमती आर्जिका पर सीता ने दीक्षा धारी है ॥
इक धोती सिर्फ राख करके परिग्रह की पोट उतारी है २
केवली सकल भूषण जी के उपदेश सुन रही जाकर के ॥
वैराग्य समें ताकी शोभा क्या उपमा दूं दिखला करके ३

जब रामचन्द्र को चेत हुआ सीता ना पड़ी दिखाई है ॥
होगये सुन्न करि क्रोध चले जहां जनक नंदनी आई है ४
सीता के बिना मरण अच्छा कैसे करि सहूं जुदाई है ॥
करि क्रोध हृदय में बार बार ऐसे कहि गिरा सुनाई है ५
देखो सीता को देवों ने पहले दी मान बड़ाई है ॥
अब हर कर उसको लेय गये क्या उन ये कुमति कमाई है ६
या तो उसको लौटा देवें नातर हो जाय लड़ाई है ॥
यह सुनि करके लक्ष्मण जी ने तिनको बुद्धी उपजाई है ७
मिटि गया क्रोध जब हिरदे का सन्तोष भावहो आयाहै॥
केवली सकल भूषण प्रभू के दर्शन का हुआ उम्हायाहै ८

दोहा

गंध कुटी आ देख कर भागे सकल विकार ।
चरण केवली केन मैं पड़े राम बहु बार १

चौपाई

फिर रामचन्द्र जी हाथ जोड़ मुख से यों बिनती करते हैं ॥
भगवान आप के दर्शन से सब पाप पीछले टरते हैं १
भव चिन्ता को मेटन वाले तुमही लग दोर हमारा है ॥
खल के टारी जनके तारी जग जाहिर नाम तुम्हारा है २
तुम नीति निपुण त्रैलोक पती इस लीये लिया सहाराहै॥
थारे शासन का नाथ मुझे हो रहा भरोसा भारा है ३

जो शरण आपकी आता है उससे यमराज डराता है ॥
इस सुयश तुम्हारे साँचे को कथि वेद पुराण बताता है ४
जिसने तुमसे दिलदर्द कहा उसका दुःख तुमने हाना है ॥
अघ छोटा मोटा नाश सुक्ख दे दिया तिसे मनमाना है ५
चिन्तामणि पारष कल्पतरू याचना किये पर देते हैं ॥
लेकिन बिन मांगे नाथ आप आशा पूरण कर देते हैं ६
थारी भक्ति कर देव पती और चक्रपती पद पाना है ॥
क्या बात कहूं बिस्तार बढ़ा मिल जाता मोक्ष ठिकाना है॥
चौरासी लाख योनियों में चिन मूरत मेरा अटका है ॥
आपकी शरणमें आये बिन ना मिटा अभी तक खटकाहै९
जब खोज करूं शिव मारगकी तो कर्म अगाड़ी आता है ॥
ये विघ्न मेरा अब दूर करो सुख देउ निराकुल ताकाहै१०

दोहा

अधम उधारन है प्रभो अब कछु करो न देर ।
मोक्ष पुरी के पन्थ को बतला दो सुनि टेर १
कौन तरह इस जीवका छूटै सकल विकार ॥
सो वतलादीजै प्रभो जग जीवन हित कार ॥

चौपाई

सुनि रामचन्द्र के वचनों को निर अक्षर वानी खिरती है ॥
मुक्ती का मारग वतलाकर जीवोंके दुखको हरती है १

लोकोंका प्रथम कथन कीना फिर पुराय पाप वतलाया है॥
श्रावक और मुनि के धर्मों का निर्णय करके समझाया है॰
दश धर्म और रतनयत्रयका कर दीना खूब खुलासा है॥
जिनको धारण करने से छूटे यम के घरका वासा है ३
व्यवहार और निश्चय मारग दोनो रस्तों से चलता है ॥
जो नहीं जानता इस पथको वह जगत बीच ही रलता है ४

दोहा

दया ज्ञान वैराज्ञ तप संजम भाव धरेय।
यही मोक्ष को द्वार है धारें पावें तेय २

चौपाई

तन धन योवन न हमेस रहै ना विषम भोग संग जाताहै॥
मानिद धनुष नभके रंग ये क्षण मान्तर ही दिखलाता है१
सुत मात पिता दारा भगनी जो दासी दास कहाते हैं ॥
कोई अन्त समें ना लार होयँ सब छोड़ि अलग होजाते हैं१
हाथी घोड़े गौ भैंस आदि सुन्दर पालकी सजाते हैं ॥
इस थोड़े से जीवन खातर ऊंचा अट्टा चिनवाते हैं २
याकू मारूं वाकूँ छोड़ूँ मन के लड्डू बटवाते हैं ॥
कुछ आज करूं कुछ काल करूं ऐसे ही समय गमाते हैं३
ये काल बड़ा बल धारी है इससे ना पार बसाता है ॥
सुर असुर खगादिक देवों का छिन में फंका कर जाता है४

मणि मंत्र जंत्र जादू टोना इसके ऊपर ना चलते हैं ॥
अर्थात् उपाय करो कितने सब जाय खाक में रलते हैं ५
इस तरह जीव चारों गति में दुख सहता भरता फिरता है॥
परिवर्तन पूरै करने में ना मिलै कभी भी थिरता है ६
जो पुन्य पाप कीये इसने उनका फल जैसा होता है॥
उसमें कोई हिस्सेदार नहीं ये खुद ही आप भोगता है ७
पय पानी मिलने के समान ज्यों जीव देह मिलि रहते हैं॥
फिर भी हैं दोनों अलग अलग यों जिनवाणी में कहते हैं ८
जब शरीर ही अपना न हुआ तो और कौन होवे अपना ॥
ये तो प्रतक्ष्य ही दिखलाते परिवारादिक निशिकासपना ९
यदि इस शरीर पर गौर करो तो देख देख घिन आती है॥
विष्टा चर्वी मूत्रादि वस्तु हर जगै भरी दिखलाती है १०
ये हाड़ मांस का पिंजर है है रुधिर राधि से भरा हुआ ॥
सो नव द्वारों में होकरके बाहिर दिखलाता पड़ा हुआ ११
इसलिये प्रीति इस देही से हरगिज कभी न करनी चहिये ॥
हो सके जहांतक निशि वासर वैराग्य भाव रखनी चहिये १२

दोहा

व्याधि उपाधिन के सहित है पापों का कोष ।
ऐसे तन अपवित्र को क्यों कर कीजे पोस १

चौपाई

इसलिये जगत वासी जीवो देखो विचार इस हालत पर ॥
ये लोक कहा और कैसा है कर रहे कहा आये क्याकर १
होगये अनन्ते काल यहां इस आतम को फिरते फिरते ॥
लेकिन मौका ऐसा न मिला जो समकित पा शिवतिय बरतै २
अब मोका मिला आन करके नरतन पाने का सार यही ॥
इस जैन धर्म रूपी नैया पर बैठि चलौ हो पार सही ३

दोहा

शिव मारग का कथन सुनि सब ही भये हुलास ।
सेनापति जो राम का जग से हुआ उदास १
रामचन्द्र के पास आ करन लगा अरदास ।
आज्ञा दीजे नाथ मोहिं करूं विपन का वास २

चौपाई

है ये संसार असार प्रभो ना सार कहीं दिखलाता है ॥
मिथ्या मारग में फंस करके ये प्राणी चक्कर खाता है १
गये बीत अनन्ते काल मुझे अब तक ना मिला ठिकाना है॥
तन धन जनमें ही हर्षमान आतम सरूप ना जाना है २
सो आज केवली के मुख से निज आतम कोपहिचाना है ॥
धरिकें मुनि वृत तप करूं जाय ये हो मेरे मन मांत्रा है ३
सुनि रामचन्द्र यों कहन लगे जिनमत की दीक्षा दुर्धर है॥

जग का स्नेह छोड़ करके कैसे धारैगा निर्भर है ४
बाईस परीषह मुनियों की नातो से बन्धु सही जावें ॥
दुर्जन जन बुरे बचन बोलें और भी बेदन उपजावें ५
तजि कोमल सैया को कैसे जा विषम भूमि में सोवैगा ॥
क्षत्रापन के सुभाव को कैसे छोड़ि अलग तू होवेगा ६
उपवास कठिन से कठिन वहाँ कैसे करि दिवस बितावैगा ॥
रस निरस मिलै सूखा रूखा भोजन सौ कैसे खावैगा ८
और भी अनेक तरह संकट वैराग्ञ पने में आते हैं ॥
तिनके कारण बड़ बड़े तपी तप करने से डिग जाते हैं९

दोहा

इतनी सुनि सेनापती कहन लगा इस तौर ।
नेह आप ही से तजा तो भारी क्या और ?

छन्द

हे प्रभो इस माया ठगनी के जो कोई पड़ा फंद में आय ॥
पागल सरका उसे बनावे सारो सुध बुध देय भुलाय १
दुष्ट स्वभावी पापी क्रोधी नीच अधर्मी बुद्धि विहीन ॥
अन्याई निंदक अरू हिंसक मूर्ख कृतघ्नी विदया हीन २
मृगया मृषा मद्यपी ज्वारी कपटी कृपण अन्त आधीन ॥
लोभी कामी शठ निर्दयता स्वजन विरोधी न्याय विहीन३
अविवेकी मानी तिय लम्पट हठी प्रमादी और वाचाल ॥

कटु भाषी निष्ठुर गुरु द्रोही स्वच्छा चारी दुर्जन पाल ४
करि पीडन बाग्दन्ड दुष्टता रिस्वत लेन बचन जिमिज्वाल॥
इतने अवगुण इस ठगनी में इससे बचै जो होय निहाल ५

दोहा

मोत बुढ़ापे का प्रभो जब तक लगे न दाव।
तब तक अपने भले का जाकर करूं उपाव १

छन्द

मृत्यु भक्षणी जग जीवों को मार मार कर खाती है॥
राजा रंक सभी के शिर पर जाके चक्र चलाती है १
ऐसा घर कोई ना दीषै जिसमें ये ना जाती है॥
आती जाती नहीं दिखाती ना कोई शस्त्र चलाती है २
चुपके चुपके पकड़लेय ना कोई शब्द सुनाती है॥
सुनैं शिपारस नहीं किसी की ना कुछ रिशवत खाती है ३
खान पान व्यवहार जो चूकै उसको मुश्क चढ़ाती है॥
बूढ़े तो जागीर हैं इसकी तिन्हें देख हर्षाती है ४
बच्चे मूरख माताओं के तिन्हें बीन कर खाती है॥
मानी मायावी धींगों को पर्वा में ना लाती है ५
धर्म भक्त जनके चरणों में आकर शीश नवाती है॥
पापी जनको पकड़ पकड़ के खूबहि नाच नचाती है ६

दोहा

इसे देख सब रोवते यह मन में हर्षाय ।
सो मृत्यू को देख कर सूझ पड़ी मोय आय १

चौपाई

है भवबन अंधकार भारी इससे निकलना जरूरी है ॥
तज गेह देह से नेह मैंने दिल में करि लई सबूरी है १
अब आतम के हित के सिवाय ना दूजी बात सुहाती है ॥
जगकी सारी महिमा मुझको बिल्कुल फीकी दिखलाती है २
यों बचन सुने सेनापति के राम के नैन भरि आये हैं ॥
मोह को छोड़ कर नीठि नीठि कहि ऐसे बचन सुनाये हैं ३
है धन्य धन्य तुमको भाई ये नीकी बात बिचारी है ॥
जग की सारी सम्पति बिसार कीनी तप की तैयारी है ४
अब एक बात सुनलो मेरी जब तक ना मोक्ष तुम्हारी है ॥
रहो देव गती में जब तक तुम सुधि लेते रहो हमारी हैं ५
हां करके नमस्कार कीनी चलि दिया बीर तप करने को ॥
जा पहुंचा निकट केवली के भव सागर पार उतरने को ६
बाह्याभ्यन्तर परि गह त्यागा मुक्तीका पहिरा बाना है ॥
तजि राग द्वेष निर्ग्रन्थ हुआ समता रस को पहिचाना है ७
और भी अनेक महीप संग मुनि हूए तजा जमाना है ॥
होगये बहुत से अणुव्रती रत्नत्रय साँचा जाना है ८

इस तरह धर्म की महिमा को सुर असुर नरों ने माना है ॥
करि नमस्कार जिनवर जी को निज निज घर हुए रवाना है९

दोहा

प्रणामि जिनन्द मुनिन्द को बार बार शिरनाय ।
रामचन्द्र जी वहां से सिय समीप गये आय १
ताके तप को देख कर मन मे हर्ष बढ़ाय ।
क्षमा करा कर चल पड़े सुतन सहित घर आय २

(सीता जी की बारह भावना)

दोहा

सीता के तप की कथा कहूं कछु यहां गाय ।
अभिलाषी जो मोक्ष के सुनों भव्यचित्त लाय १
बारै भावन भावती करै महा तप घोर ॥
जा से पहिले कर्म का आता जावे ओर २

अनत्य भावना

ये जग अथिर असार है महा दुःख की खान १
यामे राचे ते दुखी विरचे ते सुख जान २
देखत देखत विलयजाय जग तनधन योवन पितु सुतदार १
राज भोग आज्ञा बलवाहन गृह लक्ष्मी प्रीती परिवार २
इन्द्र धनुष्य वत बुद बुद बादल बिजली वत ये जगतअसार ३
ताते ये जग अथिर जानकैं धरो चित्त वैराग्य विचार ४

* अशरण भावना *

या जगमें जमराज गृसत जियं तव रक्षक कोई न त्रिकाल १
इन्द्र धरणेंद्र नरेंद्र खगेन्द्र अरू भूत प्रेत योगिन वैताल २
औषध यंत्र मंत्र गृह पृथ्वी छोड़ि जाय ऊरध पाताल ३
तो भी काल व्याल से जग में बचा नहीं माई का लाल ४

संसार भावना

इस संसार क्षार सागर में ये जिय भ्रमत चतुर गति मांहि १
तथा पंच परिवर्तन में जिय भ्रम्यों अनंत काल दुखमांहि २
सरसों सम सुख हेत मेरू सम दुःखों का नहि पार लहाँहि ३
ताते इस जग में से निकसूँ ये भ्यासी मेरे मन मांहि ४

एकत्त्व भावना

ये जिय स्वर्ग नर्क के मांहीं सुखदुख सहता फिरै त्रिकाल १
तहां सहाई है नहीं कोई मात पिता तिय भाई लाल २
ये कुटुम्ब स्वारथ को संगी कोई दुख को सकै न टाल ३
रोग शोक अरू जन्म मरण में तूही भोगी दुःख बिशाल ४

अन्यत्त्व भावना

च्छीर नीर को राज हंस बिन भिन्न भिन्न को करै बनाय १
मिले एकसे दोषें तन जिय तेभी अन्य अन्य होजाय २
स्त्री सुत पितु मात राज धन येतो अन्य प्रतक्ष लखाय ३

त्यों ज्ञानी बिन भिन्न करैको जडजिय मिले सदांके आय४
नर भवमें इतनी मातों का तेनें किया दुग्ध का पान ५
इक इक भव इक बूंद जोड़तें तो भरतेबहु उदधि महांन ६
अथवा तुझको इतनी माता रोई सो आसुन को जान ७
भव भव की एक बूंद इकट्ठी करै तो भरते उदधि महांन४

अशुचि भावना

ये शरीर मातंग गेहसम मांस रूधिर मल मूत्र भंटार १
इसके छूए हो जाते हैं भोजन वस्त्र गंध बेकार २
कौला होय न श्वेत उदधि मे लेजा धोओ बार हजार ३
इसी तरह मल घटसम देही होय न शुद्ध धोय बहु वार४

आश्रव भावना

छिद्र सहित तरनीजल डूवै त्यों आश्रव जलजीव डुवाय१
ते आश्रव सत्तावन जानों मिथ्या अविरत जोग कषाय२
इन ही करके अष्ट कर्म मल उपजें नाना भेद बनाय ३
तिस ही कर दुःख पावें जगजीय तातें आश्रव हेय बताय४

संवर भावना

कर्माश्रव द्वारन को रोकै ताके संवर होत विख्यात १
गुप्ति समित चारित्र परीषह अनुपेक्षा दशधर्म ग्रहात २
इसकर वसुविधि कर्म न अवै ज्योंजल छिद्र नाव रुकजात३

तातें जे जन संवर धारें तिनके अष्ट कर्म नशि जांत ४

निर्जरा भावना

जो ज्ञानी वैराग्य भाव कर मद निदान छोड़ै तप धार १
तिनके हो अविपाक निर्जरा चतुर्गती के दुख निरवार २
जो अज्ञानी राग द्वेषकर बाधें कर्म पूर्व फल भार ३
उदय काल रसदेय निर्जरैसो सविपाक चतुर्गति धार ४

लोक भावना

मध्य अलोकाकाश क्षेत्र के लोकाकाश जो पुरूषा कार १
इसका कोईन कर्ता हर्ता स्वयं सिद्ध वातर आधार २
चौड़ाई मौटाई ऊंचाई घनाकार डोरी विस्तार ३
तामें तीनलोक षटद्रव्य रू जीव समास अनेक प्रकार ४

वोधि दुर्लभ भावना

जीव अनादिनिगोद माँहिते निकस्यों नाहिंलई कोई काय १
कठिननिकसि थावर तनपायो काल अनंत तहाँदुख पाय २
कठिन निकलत्रष पशु पंचेंद्रिय पर्यापत संज्ञी भवआय ३
कठिन कर्मभू आर्य मनुष्य गतिपाना उत्तम पूरण आय ४
पूरण इन्द्री रोग रहित तन धन आजीवन कठिन लहाहि ५
खान पान स्वाधीन सुबुद्धी चिन्तारहित कठिन वृष जाहि ६

रहितप्रमादकेठिनघूर्णश्रवणहिं धारण सक्ति महा कठिनाहि७
यों लखि चौरासी योनी में है जिय दुर्लभ बोधि लहाय८
सुलभ जगत में राजसम्पदा बल वाहन आज्ञा अधिकार९
पुत्रकलत्र भोग सुखसंपति विद्याविभव ऋद्धि परिबार१०
बोधि रतन दुर्लभ या जगमें याको उद्यम करो सम्हार११
या बिन ये सब सुख सामिग्री केलथंभवत है जुअसार१२

धर्म लाभ भावना

वस्तु स्वभाव धर्म दश लक्षण अरू रत्न त्रय जीव दया १
याहीको आधार भव्यजीय स्वर्ग मोक्ष का मार्ग लया २
याहीकर सुर तरूचिन्तामणि पारस धेनु अहि मिन्द्रभया ३
इन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र भोगभू ऋद्धि विक्रिया अवधि लया ४
पुत्र कलत्र मित्र सुखसम्पति राज भोग एश्वर्य सुधाम ५
इसी धर्म से शत्रु मित्र हो विष अमृत सरसुमन समान ६
जल थल अनल वारि हरि मृगसम होयजाय ये निश्चे जान७

दोहा

यह विधि बारह भावना वार वार कर याद ॥
वीतरागता का तभी लगी चाखने स्वाद १
इन्द्रिन का निग्रह करै चौकषाय करिघात ॥
झुलसीलता समान सम भयो सियाको गात २

चौपाई

बाईष परीषह जीत जीत पहला खाता भुगताती है ॥
द्वादश प्रकार तप तप करके कर्मोंकी खाक बनाती है १
बेला तेला पक्षोप वास करि करि तन क्षीण बनाती है ॥
सब दोष टाल ऐकही वार भिक्ष्या करि दिनमें खाती है२
शीलके वृतोंमें अनुरागिन निशि वासर आतम ध्याती है॥
इसलिये चित्त होगया शान्ति मुद्रा दिखलाई आती है ३
ना रहा बदन में मांस रुधिर ना नसाजाल दिखलाती है॥
मानिद् काठकी पुतली के दर्पणवत देह दिपाती है ४
चलते में चार हाथ धरती आगेको चलै निरखती है ॥
सब जीवों को अपने समान लखिदया भावना भरती है ५
दश धर्मों को पालती सदां हिरदे से नहीं विसरती है ॥
पांचों समिती पालती हुई संयम को रक्षा करती है ६
तपके कारण तन बदल गया ना पहचनबे में आता है ॥
संयम का बाना पहन लिया ना राग द्वेष से नाता है ७
आर्जिका इकट्ठी होकरके तिसका यश नितही गाती हैं ॥
जिसका चारित्र देख करकें अपना आचर्ण बनाती हैं ८
इस प्रकार बासठ वर्ष तलक जानकी महा तप कीया है ॥
तैतीस दिना आयुमें रहै तब अनशन वृत धरिलीया है ९
आराधन चारों बार बार करि यादि छोड़ तन दीया है ॥

जा स्वर्ग सोलमें वास किया नारो से नरतन लीया है १०
होकर प्रतेन्द्र तहां राज करै यह जैन धर्म की माया है ॥
नाकिसी तरहकी खेद वहाँ मनमाना सुख उपजाया है११
अपसरा हजारों सेवा में मनमाने भोग विलसता है ॥
मीर्तिन्द चाँद और तारों के शोभाको पाकर वसता है१२

दोहा

पूजा देव जिनेंद्र की करता रहै सुरेस ॥
मध्य लोक में आयकर तीरथ करै हमेस १
कथा समापत होत है था सो किया बयान ॥
धर्म रत संग्रह करौ जो सुख चहो महान २

चौपाई

धर्म से मिलै स्वर्गका वास धर्महि से मोक्ष ठिकाना है ॥
धर्म से सम्पदा सर्व मिलै और चक्रपती पद पाना है १
धर्म से निरोग शरीर मिलै इन्द्री सम्पूरण सुखदाई ॥
धर्म से मिलै यश दुनियां में ये जिनवाणी में बतलाई २
इसलीये धर्म गहो भविजन तो मनमाने सुख पाओगे ॥
बिनधर्म किये नरतन तजकर फिर भवभन में भटकाओगे३
जबलों न बुढ़ापा रोग गहै जो करना है सो कर गुजरो ॥
बादमें अगर करना चाहो होता नहीं कोटि उपाय करो ४
इस तृष्णा अगन धधकतीमें ले समता रूपी रस पीजै ॥

इन विषय कषाय बढ़ी हुई को दूर करो निज पद लीजै ५

दोहा

काल काल मतना करो बनों कालके काल ॥
ढूंढलेउ उस ठौर को जहां न पहुंचै काल १

चौपाई

कहाँ है वह रावण लंकपती जिसके सोने की लंका थी ॥
बल विद्याके मधमें जिसको ना किसी तरहकी शंका थी १
उस लक्ष्मणका भी पता नहीं जिसने रावणको मारा था॥
कहाँ गई विशिल्या शीलवती जिसने लक्ष्मणको ताराथा २
नहीं पता कृष्ण बलधारी का जिसकीथा चक्कर रखवारी॥
सो बनमें मरा भीलकर से तजि कुटुम सम्पदा सहकारी ३
कहाँ गये युधिष्ठिर भीम नकुल सहदेव धनंजय बलधारी॥
जब ऐसे ऐसे नहीं रहे तो कहां बात म्हारी थारी ४
इसलिये हो सके जहाँ तलक शिव पानेका उद्यम कीजै॥
नरभव पाने का लाभ यही अवसर पाकर हित करलीजै ५

दोहा

जग जीवनकी नित मति करते रहो सहाय ॥
याको ये सिद्धान्त है वैर विरोध मिटाय १

चौपाई

जैसे सर्वज्ञ वखान करी सोतो गुरु गौतम ने जानी ॥

नीचे लिखी पुस्तकों के मिलने का पता।

कल्पित कथा समीक्षा पृष्ट ६६ इसमें श्वे० साधु चौथमलजी के लिखे भगवान महावीर स्वामी का आदर्श जीवन की समालोचना की गई है। बिना मूल्य

पटपन्थ प्रकाश ।≈) कीमत पृष्ट १२० इसमें ब्रा० चाँदमलजी मदसोर के लिखे प्रत्युत्तर नाम की पुस्तक का जवाब लिखा गया है अथवा श्वे० स्थानक मत के सूत्रों की पोल खोली गई है।

खूनी साधू)॥ कीमत पृष्ट १२ यह पुस्तक राधेश्याम की तर्ज में है। इसमें श्वे० स्थानक वासी साधुओं की ढ़ोंग लीला दिखलाई गई है।

सत्य परीक्षा ।) कीमत पृष्ट ७६ इस पुस्त श्वे० साधु श्रीचन्दजी के बनाये 'सत्या सत्य का उत्तर लिखा है, इस लाजवाब पुस्तक के स्थानक वासियों ने फिर कोई पुस्तक नहीं ।

कल्याण आलोचना पृ० ६४ बिना

आदर्श भावना बिना मुल्य।

पताः—मु० मुरादाबाद वैद्या कान्त जी जैन वैद्य यहां जैन रामायण मिल सकती है ।≈) कीमत।